

लेखनी-बेला

तथा

अन्य कृतियाँ

वीरेन्द्र मिश्र



भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय-अथमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रकाशक

मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी



प्रथम संस्करण
जनवरी १९५८ ई०
मूल्य तीन रुपये



मुद्रक

बाबूलाल जैन फागुल्ल
संमति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

यह सृजन

‘लेखनी-वेला’ में अपनी कविताओंके सम्बन्धमें स्वयम् कोई वक्तव्य मैं नहीं दे रहा हूँ। पिछले सप्ताह ‘गीतम’ (१९५३) में भी मैं इससे बचा था। भविष्यमें यदि आवश्यक समझूँगा तो सविस्तार कुछ कहूँगा। और तभी रचनामूलक मेरे दृष्टिकोण, मान्यताएँ, तथा मतव्य हिन्दी काव्य और काव्यकारसे सम्बद्ध भूमियोंपर उजागर हा सकेंगे।

‘गीतम’ के पश्चात् लिखित मेरी छोटी-बड़ी सत्तायन रचनाओं के इस प्रतीक्षित नये गीत-सप्ताहमें प्रेमी पाठकों और श्रोताओंको पूर्व परिचय का आकर्षण मिलेगा।

मैंने यहाँ कुछ उन कविताओंको भी स्थान दिया है जो गीतम कालके पहलेकी हैं पर महत्त्वपूर्ण हैं। ‘मसूरी’ एक ऐसी ही ध्वनि रचना है, जिसे मैंने रगावलोकन तथा दृश्य प्रभावकी एक ही कलम से उक्त प्रकृतिकेन्द्र घूमते समय ज्यों-का-स्यों रेखांकित कर लिया था।

‘देश’ भी है इसमें, जिसका व्यापक रूप से स्वागत हो चुका है। देशकी सस्कृति और शान्तिकी पृष्ठभूमिपर इतिहास, भूगोल और राजनीतिकी नामावली प्रणालीमें सर्वदा लिखित रचनाओंसे भिन्न है यह सगीतमयी कृति। कला और सास्कृतिकताके उपेक्षित तत्त्वों का इसमें आलोकन हुआ है।

इस सप्ताह में अत्यन्त छोटे गीत भी हैं जिन्हें अपने विशेष छन्दों में लिखा गया है। कुछ अन्य गीत हैं जिनमें विभिन्न जीवनानुभूतियों अपनी तरह से अभिव्यक्त हुई हैं। विगत सप्ताहकी ही भाँति इस

सफलनर्म भी मृत्यु, निराशा तथा रीतिकालीन शृङ्गार-गंधसे मुक्त गीतों द्वारा नये वातावरणका प्रभाव निर्देित हुआ है ।

भारतके सांख्यिक प्रतिनिधि-भण्डालके एक सदस्यके नाते अपनी नेपाल-यात्राके समय विमानका अपना यात्रानुभव हिन्दीके वर्तमान काव्य घरातलके प्रतीक रूपमें मुक्त छन्द के 'वायुयान में' सहज भावसे व्यक्त करनेका प्रयत्न किया है ।

विविध रूप विधानके इस समूहमें कृतित्वकी मनोवाञ्छित अभिव्यक्ति मुझे अधूरी ही लगती है । शब्द-स्वर द्वारा अभी अनकहे हिमालयकी कितनी अनवरत अभिव्यजना होनी है ! फिर भी यदि इन रचनाओंमें मुझे कहीं कोई सफलता मिली हा तो उसे पाठक और समीक्षक अग्रसर कर सकते हैं । उन्हें मेरा अभिन्न धन्यवाद !

आग्ने का बाज़ार
लश्कर (ग्वालियर) }

वीरेन्द्र मिश्र

रचना-क्रम

१ शब्द-स्वर वाले दुराहे पर	[लेखनी प्रेला]	६
२ तू सिसकती शाम-सा गमगीन है		१३
३ मिले हो तो कहो कुछ तुम		१६
४ मिल गये हो मददगार हम-उम्र तुम		१८
५ आज मुझसे कहा गीत ने		२१
६ घटा उठे, तो मेरा भी मन हो		२३
७ तुम्हारे प्यार की दहरी बुलाती है मुझे		२५
८ ओंसू बिल्कुल ही सो जाएँ		२८
९ जाते-जाते, रुड-मुड कर मत देसो तुम		३१
१० जा रहा हूँ, नहीं भूलना		३४
११ दूरी और निकटता का अद्भुत विस्तार हुआ जाता है		३६
१२ तेरे हर ओंसू से बोझिल है मन मेरा		३९
१३ तुम मेरे गीतों के द्वारे आओ ना आओ		४१
१४ मेरे नयन की उदासी तुम्हें ज्ञात है		४३
१५ खडा उम्र की दहरी पर मैं सोचता		४६
१६ आज मावस मुझे है मिली		४९
१७ पीता हुआ अंधेरा बढ़ता जाता हूँ		५१
१८ बढा दिया है पाँच आज मैंने अलवेली राह पर		५४
१९ एक सस्ती मिली		५७

२०	हो रहे हैं सत्र तरफ से		६०
२१	किमी स्वप्न को सोज लाने डगर पर		६४
२२	रो-रो कर सिन्दूर ढँढती		६८
२३	जब भी गिरा एक आसू कहीं		७१
२४	सपन सभी जो		७३
२५	इस दिये के माथ पर		७६
२६	सुख भी छूटा		७६
२७	मन ! तुम न टटो अभी हार कर		८२
२८	विल्कुल नये अश्रुके राहियो !		८४
२९	निशा के राजकुँवर !	[दूबते चाँद के प्रति]	८७
३०	कुकुम निसेरती सुवह सुहागिन गाती है	[पागुन]	८९
३१	कि जन नील नभ में चमकता सितारा	[जूह-स्मृति]	९२
३२	सावन ने तो आरसें भर डालीं बादल से		९५
३३	ठण्डी-ठण्डी छाँव है	[मसूरी]	९८
३४	नीली निशा के किनारे	[सितारे]	१०६
३५	घिरते रहो, घुमडते रहो	[बादल स]	१०८
३६	पगडण्डी से जाने वाली	[युग की भोर]	१११
३७	दग की दुकान पर		११३
३८	जिस समय से रखा गीत है		११५
३९	किमने निहारा		११७
४०	मैंने कोहनूर-सा प्यार किया		१२०
४१	चूल्हा जलता रहे त्रिन्दगी का सदा	[गीत की बिक्री के चणामें गीत के प्रति गीत]	१२२
४२	मेरे मन तुम पड़ा और समझो तो इस ससार को		१२४

४३	कलम चल रही है कागज पर		१२६
४४	तोड़ने को डोर पल में तोड़ दूँ, मुश्किल नहीं है		१२६
४५	ओ समय की वसती किरन ।		१३१
४६	सत्य को एक बार देखा		१३३
४७	भैरवी का है समय	[गीतगार के प्रति]	१३७
४८	मिट्टी से फसलों का सोना देने वाला दंतता	[किसान]	१३६
४९	लो अब गाता हूँ	[देश]	१४१
५०	आनाज आ रही है	[कलम के जादूगरो ! उठो]	१४६
५१	ज्योति दो		१५७
५२	गूँज-भरे जगल में		१६१
५३	आज मैं आकाश में हूँ		१६६
५४	साम्भ-सकारे चन्दा सूरज कग्ते जिसकी आरती		१७२
५५	कौन स्वीकारे भरी अजलि नयन की		१७५
५६	बोल, बोल, बोल, अरी बेला ! तू है कहाँ		१७८
५७	मञ्जिल के मन्दिर में, पूजा के थाल-सा		१८१





लेखनी-वेला

१

शब्द-स्वर वाले दुराहे पर
देख तो रे, जुड़ रहा मेला
धोन पर है गीत का जादू
लेखनी में गूँजती बेला

रूपना के ऋण में सरगम
भैरवी में भावना का नम

दो उगर है एक मजिल की
धार दो हैं, एक है सगम

दर्द को गहनाटयो में सुन
गीत की गहराटयों में बुन

मन निराशा से नहीं बहला
पास तो आसावरी के जा

तू रहेगा कौन दावे से
लौट आ पिछले मुलापे से

गीत है सागर अगर सगीत मन्थन है
व्यक्ति का अभिव्यक्ति में अद्भुत विसर्जन है

गद्य वाले राज-पथ पर तू
व्यर्थ जाकर हाथ मत फैला



गूँज पर ठाया तिमिर कैसा
ज्योम है तम के शिविर जैमा

जय भ्रमित-शक्ति सृजेता भी
काल सम्भ्रम है न फिर ऐसा

जब कि ज्वाला शान्त होगी फूल
यह सदी दृष्टान्त होगी फूल

यह कि कविता की ध्वजाओं को
आह से फूटी ऋचाओं को

लोग कुठ करते उजागर थे
धूल में भी फूल के स्वर थे

ज्ञान या विज्ञान के तूफान के आगे
थे नहीं सब लोग भेड़ों की तरह भागे

गीत की रस-रागिनी सुनकर
थम गया था अश्रु का रेला



उन्द रे, म्वउन्द होकर गा
मत कहीं भी बन्द होकर गा

मॉस से सींचे बगीचे में
फूल-सा म्विल, गन्ध होकर गा

गन्ध लेकिन गँजती भी हो
धूल जिसको पृजती भी हो

वन म्वयम् मन्दिर निवेदन का
हो नहीं बन्धन विद्रोपण का

अश्रु ही दीवार हो उसमें
स्वप्न वन्दनवार हो उसमें

धूप से थक लेखनी जो ग्रँट में उतरी
थाम ले तू आज उसकी पीर की गठरी

ज़िन्दगी के चन्दनी तन का
चौदनी आँचल हुआ मैला



२

तू सिसकती शाम सा गमगीन है
आ तुझे सिलती किरन तक ले चढ़ें
गीत के रूपम गगन तक ले चढ़ें

म्वप्न तेरे उड गये आकाश में
 तू पुता तो ओंमुओ के हार से
 तेरता मन कृल वाली प्याम में
 क्या उमे फिर द्वीप के त्यौहार से
 तू अ-पूजित मूर्ति-सा चुपचाप है
 आ तुझे मुग्धरित सपन तरु ले चलूँ
 माफ-मुथरे आचरण तरु ल चलूँ



देग्वते हम आ रहे हर कन गरम
 रेत के हर श्वेन रेगिस्तान का
 एक हिरनी, एक तृष्णा, एक अम,
 प्रश्न फिर है ही नहा मधुपान का
 गन्ध तू भटकी हुई वीरान में
 आ तुझे तेरे पन्न तरु ले चलूँ
 एक सिन्दूरी चमन तरु ले चलूँ



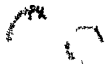
हर दिशा में भागनेवाली हवा ।
 देख, सूनी है मलय की पालकी
 जुड़ रही है सर्द साँसों की सभा
 और त्यौरी है उदलती काल की

जो कि तेरे ही दुखो से है दुखी
चल उसी भीगे नयन तक ले चलूँ
चौद को जाते चरण तक ले चलूँ



जगमगा तू चौदनी की सेज पर
मै रहूँ तो द्वार का स्वरकार ही
मजिलों के मन्दिरों में भेजकर
मै रहूँ तो सिर्फ बन्दनगार ही

मूक राधा की निरुत्तर बाँसुरी
चल तुझे सगीत-क्षण तक ले चलूँ
रूप-मन को गीत-मन तक ले चलूँ



३

मिले हो, तो, कहो कुछ तुम, कहें कुछ हम, सुने जीवन
बहुत दिन बाद फिर सुनने-सुनाने का हुआ है मन

न जाने तुम कहीं किम पन्थ मे चलकर यहाँ आए
 कहीं पर भोर की होगी कि जो ढलकर यहाँ आए
 ज़रा बोलो किरन-स्वर मे, धुँधलके के कूटें बन्धन
 न रूठे तुम, मगर फिर भी मनाने का हुआ है मन



जवानी की गियासत-से, यहाँ तुम मौन बैठे हो
 हृदय रह-रह यही कहता, न जाने कौन बैठे हो
 कहीं तुम भी जगत की भौँति, बदले तो नहीं इस क्षण
 न हम-तुम मिल सकें थो भी, ज़माने का हुआ है मन



कहोगे तुम कि क्यों सन्देह की यह कल्पना की है
 रूआसी साध ने मेरी, तुम्हारी साधना की है
 बहुत है आँसुओ का मोल, मेरी साँस का ब्रन्दन
 इसी से फिर तुम्हे अपना बनाने का हुआ है मन



अधर की प्यास झूली है, सलौनी याद के झूले
 कहीं सघर्ष की गाथा, कहीं भटके, कहीं भूले
 ज़रा अज मुस्कराओ भी, खिले मधुश्रुतु, बहे मावन
 वसन्ती चाँदनी मे झूम जाने का हुआ है मन



न जो गाया गया, वह गीत गाने का हुआ है मन
 मिले हो तो, कहे कुछ तुम, कहे कुछ हम, सुने जीवन



४

मिल गये हो मददगार हम-उम्र तुम
लग रहा है चमकता सितारा मुझे
स्वार्थी विश्व में है किसे क्या पता
प्यार कितना मिला है तुम्हारा मुझे

मैं अमर गीत जब गुनगुनाता रहा
 पारखी एक श्रोता मिला ही नहा
 थे महकते रहे डालियों पर बहुत
 धूल म फूल कोई खिली ही नहा

गीत की आरती का समय हो गया
 तब तुम्हीं ने नयन भर निहारा मुझे
 ताज का सगमरमर हिला देखकर
 प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

जब निशा का प्रथम ही प्रहर था लगा
 ज़िन्दगी का दिया टिमटिमाने लगा
 आँसुओं की झड़ी, आँधियों का तिमिर
 काल शतरज अपनी पिछाने लगा

तब तुम्हीं नेह लेकर प्रकाशित हुए
 चाहिये और क्या था सहारा मुझे
 रूप कितने खड़े आज पठता रहे
 प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे

भूल पाए न तुमको निरुद्ध कर, भगर
 भूल बैठे तुम्हें भी कि जब आ मिले
 ये हमारी तुम्हारी कशिश खून है
 तुम हमें जब मिले, गीत से जा मिले

और सच तो यही, हो विरह या मिलन
 प्रेरणा बन तुम्हींने पुकारा मुझे
 तुम हमें दिग्न रहे, हम तुम्हें लिप्त रहे
 प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे



रोशनी दे रहे चाँद-सूरज, मगर
 दर्द दिल का नहा वे बटा पा रहे
 एक तुम प्राण के दीप हो मनचले
 साथ मेरे खुशी से जले जा रहे

यह जलन है मधुर, यह तपन है गहुत
 जन्म लेना पडेगा दुवारा मुझे
 उम्र मे प्यार का कर्ज चुकना कठिन
 प्यार इतना मिला है तुम्हारा मुझे



मेघ का राज है, खूब अन्धेर है
 चिमनियो के धुँएँ म छुपे है सपन
 और आओ निकट, मत डरो आग से
 है प्रलय-काल, फिर भी बढ़ाओ चरण

एक पतवार तुम, एक पतवार मैं
 ले चलो नाव, दिखता किनारा मुझे
 तीर पर जो खडे हँस रहे, देख लें
 प्यार कितना मिला है तुम्हारा मुझे



५

आज मुझसे कहा गीत ने
मन किसी रूपका जीतने
मौज से हार जा

आँख तूफान की अनगुली
चौदनी है नहाई - बुली

आज मुझसे कहा रूप ने
छोव दी शीतला धूप ने

ज़िन्दगी वार जा



सिर्फ तू ही नहा है दुखी
पी रही पीर चन्दा-मुखी

आज मुझसे कहा प्राण ने
म्रम के भेद को जानने

अश्रु के द्वार जा



म्रम के माथ पर है शिखर
इस किनारे थकन ही थकन

आज मुझसे कहा प्यार ने
धार में उठ रहे ज्वार ने

तू नदी-पार जा



पिछली मधुऋतु ने पी ली थी सोंसों की सुग्मई सुराही
चलते अत्र ये झुलसे अमलतास-से नयन प्राण के राही

कोई पीर नदी बन जाए अँखिया नीर परमने को
तो उमड़ें-धुमड़ गीतों के मेघ-मट्टार बरसने को



पाटण्डी वैमी ही टेढ़ी, लेकिन वह सूनी-सूनी है
या तो वह मरुथल की दासी, या वह साधु की धूनी है
कोई भीगी हुई सोंवग नागिन आए उसने को
तब तो सम्भव है आ जाए त्रिप पर मुधा बरसने को



अम्बर के ऊँचे मचान से कजरी गा, बढरी कनरारी !
चुल्लू मे ही पी लेंगे हम- ढोल जरा क्वारी पनिहारी !

मन हरियाण जामुन चुनर, घूँघट उठा दरमने को
मेरे गीत बड़े आरुण हैं तेरे माथ बरमने को



अमगट कर रही प्रतीक्षा, सावन न हमारही आए
चानक कहां टपटना जाए, कौयल रहा रिमझिमा जाए
रुठ तिन को मिल जाय नगरिया इन्द्र-धनुष की, बरमने को
युग-युग मा ले रगमममी, मातो रग बरमने को



७

तुम्हारे प्यारकी दहली जुलाती है मुझे
इसी से मैं तुम्हारे द्वार जाया करता हूँ

पंजाबी-शैली

सथानी रात धरती बात मेरे चोंद से
 मुझे लगता कि कोई गत रानी खिल रही
 सपन मेरा जुड़ा जाता तुम्हारी आँख से
 मुझ लगता कि है कोई कहानी चल रही
 तुम्हारी प्यास तो पागल बनाती है मुझे
 इसी से मैं समन्दर साथ लाया करता हूँ



ज़रा-सी जिन्दगानी है, बहुत-से दर्द है
 मगर आकाशने दुखड़ा सुनाया है किसे
 सलौने है कि जो अरमान मेरे, सर्द है
 मगर उनसे कहो मैंने सताया है किसे
 तुम्हारी पीर वीणा-सी दुभाती है मुझे
 इसीसे मैं तुम्हें दुखड़ा सुनाया करता हूँ



निमंत्रण-सा रहा से आ रहा सन्देश है
 मगर वह चुप नहीं, उसमें बड़ी आवाज है
 सवेरे की हवा है, और सादा वेश है
 तुम्हारा साज़ बजता है, तुम्हें भी नाज़ है
 तुम्हारी रागिनी लगती प्रभाती है मुझे
 इसी से मैं हमेशा गुनगुनाया करता हूँ

८

ऑस नलकुल ही सो जऑ
सपने अपने में सो जऑ
तुम इतनी रोशनी न फँको
मेरे नयन बन्द हो जऑ

माटी का बनगई दिया यह धूल नेह से गीली होकर
 छूकर इसे धन्य रुचन भी, शप न कुछ भी इसको खोकर
 सूरज-चाँद इसे तुलनाते
 अन्धडआ-आ कर फिर जाते

मिट्टी के घर दिया गीत का सदा जला है गाते-गाते

कृति-आकृति सन कुछ लुट जाए
 प्राणों का मेला उठ जाए
 तुम इतना आकाश न ठाओ
 धरा-क्षितिज सन कुछ मिट जाए



भूली-भटकी बहुत ज़िन्दगी, आखिर कुछ पा जाने को ही
 गायक आया, वीन छेड़ता, आखिर कुछ पा जाने को ही
 मिले मुम्बराहट मजिल की
 इसीलिए तो हूँ मैं पथी

अर्थ-हीन मुसकानें होता उसमें, तो क्या मुझसे बनती

हर पत्थर बादल हो जाए
 घर का घर पागल हो जाए
 तुम इतना उल्लास न बाँधो
 सुख से दुख बोझिल हो जाए

मुझको चलने देना है तो प्यार करो, मजिल बन जाओ
 वैसे ही तूफान बहुत है, पथ में तुम आँधी मत लाओ
 निरखो तो परसो भी मन को
 मेरे मधुमासी सावन को

आँसू से मत साफ करो तुम मेरे गीतो के दर्पण को
 गीत जवानी में ढल जाए
 काल समय पाकर छल जाए
 तुमट तना सन्ताप न साधो
 जिसमें अगला कल जल जाए



जन्मे हुए गीत-गुञ्जन पर वासन्ती फूलों की टोली
 चित्र-लिखित त्रिस्मय-विमुग्ध है, इस पर क्या नीलामी बोली
 यह मेरा सगीत सलौना
 है बच्चों का नहीं खिलौना

इस पर चल पाएगा कैसे स्वर्ण-रजत का जादू टोना
 यामा मिटे प्रात हो जाए
 सन कुठ स्वर्ण-सात हो जाए
 तुम इतना मधुमाम न व्यापो
 पाटल पारिजात हो जाए



६

जाते-जाते मुड-मुड कर मत देखो तुम
नादल का भगाजल ढुल-ढुल जाएगा

इस अम्लरुप अम्लरु अश्रु के मोती को
 दृग-मगम पर तुम्हां लुटाने जाये ये
 किसी हर्षार्धन की तपनी साधों की
 क्या तुम हमको याद दिलाने आये ये
 लुटते-लुटते हमको भी मत लूटो तुम
 पागल-सा पाहन-दिल गल-गल जाएगा



आज निदा-बरखा भी धूमिल घडियों में
 अमराई का सूना झूला हिलता है
 दृग से काजल, पग से पायल, रूठ रहे
 पर कोई रूठे भी तो क्या मिलता है
 खिलते-खिलते प्राणो पर मत खेलो तुम
 पाटल-दृग में सपना घुल-घुल जाएगा



मँहदी-रगी-हथेली-जुडी कलाई की
 धडकन को मत सुनो निगाहें मीली हैं
 श्याम घटाओं के अनचीहें प्याले से
 सर्द दृग ने भीगी सुधियों पी ली है
 पटी नर नर उड-उड कर मत देखो तुम
 धायल-सा स्नेहाघन खुल-खुल जाएगा

हम गीतो के इन्द्रधनुष है, शर हो तुम
जगल में मगल-सी रजनीगन्धा हो
पर उसकी हरियाली रोकोगे कैसे
जो सब कुठ हो पर सावनका अन्धा हो

अगर निरखना हो तो नभ को निरखो तुम
शबनम से मलयानिल बुल-बुल जाएगा



१०

जा रहा हूँ, नहीं भूलना,
याद करना कि जम भूलना,
प्यार की डाल पर

आज रोती हुई आँख है
 और भीगी हुई पाँख है
 कल उजाली दिखेगी निशा,
 जगमगाने लगेगी दिशा,
 चाँद के भाल पर



पीर है, तुम सही, मैं सही
 क्या कहूँ, और मैं क्या कहूँ ?
 देव-सुन राह चलना ज़रा,
 घाटियों में सम्हलना ज़रा,
 ख़ास कर ढाल पर



अब तलक कर पता था चला
 उम्र से उम्र का फासला
 जा रहा मैं अकेला कहा,
 धूल कोई हरेगा नहीं,
 उड़ रहे बाल पर



दूरी और निकटता का अद्भुत विस्तार हुआ जाता है
 इतनी दूर रहा न करो तुम जीवन भार हुआ जाता है

गिनती की सौंसें है उनपर भी सभार नहा कुठ कम है
अनहोनी बात है जिनका दुर्व्यवहार नहीं कुठ कम है
तिस पर तिल-सा एकाकी हर निमिष पहाडहुआ जाता है



नाव-हीन पतझर आ-आ कर उसा रहा वीरान नगरिया
भाग रहे पछी उड-उडकर, शेष हुए घरबार अटरिया
देर न लगती मधुवन का मधुवन मिम्मार हुआ जाता है



तुम भी कुठ-कुठ खोए होगे, वारम्बार कहो न कहो तुम
चुपके-चुपके रोए होगे, बन जलवार नहो न बहो तुम
तट जिसको समझे था माशी, नह मझधार हुआ जाता है



दुनिया का बाजार भरा है, हँसते आँसू, रोते सपने
नदिया-नाले-पर्वत के उस पार शिविर है अपने-अपने
मेरी प्यासी पलकों को दर्शन दुश्वार हुआ जाता है



कलतरुओ चुप्पी साधे था, प्रिय-प्रियोग का गीत रुआसा
मेरे पास चग आया है लेकर जाने क्या-क्या आशा
बचना बहुत कठिन है उससे, जो गलहार हुआ जाता है

देसो तो, घिरती आती है भोर-नागन में काली छाया
मूर्त्तियों के दीप-शिखर पर, शल्भ बनी कचन-सी काया
अपने हास-स्दन पर अब युगका अधिकार हुआ जाता है



१२

तेरे हर आँख से बोझिल है मन मेरा
फागुन की आँखों में सावन भर आया है

फिरनो की ऑस फिस नेहा मे डूनी है
 मुझको तो वासन्ती अम्बर भी मावनी
 कोई यह कहता है दुखड़ा यह कम होगा
 लिख-लिख कर गा-गाकर सुधियो की लावनी

उजड़ी सी वस्ती है, जगल है मन मेरा
 ऐमे में रोता तू मेरे घर आया है



सामो की राघाएँ, घडकन के मनमोहन
 खेले है तेरी उस मन्ती की ठाँव में
 तूने जो मेरे सन्तापो को दे दी थी
 सूरज-सा आया था, चन्दा के गाँव में

तत्र से ही डाली पर पाटल है मन मेरा
 तेरा टुख उसमें अत्र शत्रुधर आया है



इतना मत रोना रे, इतना मत दुख देना
 रुक जाए दूरी पर, सपनो की पालकी
 पानी म तेगी जो फिरनो की इन्ट्रेनी
 दासी बन जाए यह अँधियारे काल की

वैसे ही युग-युग से घायल है मन मेरा
 चिन्ता का पाहुन क्यों माथे पर आया है

१३

तुम मेरे गीतों के द्वारे आओ ना आओ
दरद भरे मनकी आकुलता को तो आने दो

नी-बेला

तुम मुझसे अनजान मगर दुख तो अनजान नहीं
 उससे तो हो चुकी बहुत पहले पहचान कहीं
 रुहा रहे वह किसी नयन में, है वह मेरा
 कैसे कह दू उसको होगा मेरा ध्यान नहीं

तुम अपनी शरबती निगाहे करलो बन्द भले
 आँखों से वह रही सरलता को तो आने दो

जिस बॉसुरिया के प्यासे दिन-रात अधर मेरे
 उसी डगर से सॉवरिया तरु जाते स्वर मेरे
 मन का गान-निवेदन सुननेवाले श्रोता ओ
 उसी एक वशी का जादू होता घर मेरे

तुम अपने निर्विघ्न मौन में पल-पल मुखी रहो
 बेचारी सगीत बहुलता को तो आने दो

मैं धडकन का प्यासा मुझको भाता घोष नहा
 लेकिन मुझको किसी शोर पर रोष नहीं
 किस परत की कौन शिला तुम पता न भक्तों के
 पूजन भी है नशा कि जिसमें रहता होगा नहीं

तुम पापाणी मूर्ति बने मन्दिर को धन्य करो
 पर मुझ तरु अपनी दुर्बलता को तो आने दो

१४

मेरे नयन की उदासी तुम्हें ज्ञात है
रूठे अगर तुम सपन तिलमिला जाँयगे
मेरी गुशी पर दुखी मेघ घिर आँयगे
मैं कह रहा हूँ कि तुम मुस्कराओ जरा

पूनम-अमावस मिली रात की राह पर तुम दिया जगमगाए
चूनर गुलानी नज़र की उडा कर हुआसे क्षणो को भुलाए

जीवन-नदी पर है आज, बरसात है
हारे लहर से लहर म समा जाँयगे
मन के पडोसी-पिडेमी न घर आँयगे
मै कह रहा हूँ कि तुम जगमगाओ ज़रा



यह जो उडे जा रहे खग सुनह-शाम, यह जो उडी जा रही धू
यह सन तुम्हे देख कर हो रहा है कि मस्थल बना अश्रु का धू

मन की अपेरी-उजेरी किये साथ है
भूले अगर तुम, नयन टपटना जाँयगे
बीते कथा-गीत भर-भर उभर आँयगे
मै कह रहा हूँ कि तुम गुनगुनाओ ज़रा



ढँडी बहारं गगन मे, जलधि मे, कहा कुठ मिला ही नहीं प्राण
जब से तुम्हे है निहारा, पुकारा, दुलारा, मिली गन्ध वीरान

तुम पर निठावर सदा फूल है, पात है
गजनम स्लाकर सुमन फिर कहीं जाँयगे
सौग्भ-सँदेसे हवा में बिम्बर आँयगे
मै कह रहा हूँ कि तुम शूम जाओ ज़रा

सब पृथते हो जगर, तो सुनो, एक ऐसी लहर है उठाना हमें
हम-तुम भले डूब जाँँ मगर धार से उठ पुकारे जमाना हमें

तुममे ठिपी अनरही कौन-सी बात है
जिस दिन प्रणय के विहग रुँला जाँँगे
उस दिन निमित्त ज़िन्दगी के अखर जाँँगे
फिर रह रहा है कि तुम मुम्कराओ ज़रा



१५

सडा उम्र की दहली पर मैं सोचता—

एक फूल तेरी बेणी में गूँथकर

जीवन में कब ला पाया मधुमास में

फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि दिन बारह मास में

सदा रहा तुझको बिलखाता हँसते हुए जहान में
 तुझे खाच ले गया दूर तक मैं आँधी-तूफान में
 जितनी सिन्दूरी साधें था धरती से आकाश तक
 एक-एक कर सन जुम्हलाई, धूल हुई वीरान में
 आज म्वय मैं अपने से ही पृष्ठता—

एक पीर अगणित पीरो में पृष्ठकर
 कितना तुझको ढे पाया उल्लास में
 फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास में



कभी सोचता था कि करूँगा होड गगन के चाँद से
 बाधूँगा मलयानिल तेरी साँसों के उन्माद से
 रेशम के परिधानों में दुल्हन नाचेगी झूमकर
 मैं युग-युग तक प्यार करूँगा, नई नरैली साध से
 और आज मैं आँख फाडकर देगता—

पास पडा अमृत का प्याला छोडकर
 त्रिप पीने का करता हूँ अभ्यास मैं
 फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास में



प्राणों से प्यारे अरमानों पर मेने वारा तुझे
 तुझे प्यार कर भी रचना की दुनिया में हारा तुझ
 फिर भी जीत मिली है जो, तेरे आगे कुछ भी नहीं
 गीत और तू दोनों मेरे, और न कुछ प्यारा मुझे

मै खुशियो का राजसिहाँसन ओडता—

एक गीत अगणित सौंसों से जोडकर

भोगे जाता हूँ आथिक वनवाम म
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मे



साध रँगी गेरू से तूने, चला झुल्सते पथ पर
गाँव-नगर-नदिया-परंत के समारम्भ पर, अन्त पर
ठरस-परस केवल पीडा का, नहीं मिला सुख का तुझे
वैरिन हुई दिवाली-होली, खिलते हुए वसन्त पर
आँव भरे वादल नभ मे है टोलता

एक व्रंद तेरे आँसू की चूमकर

सावन से रुब रँग पाया आकाश मैं
फिर भी चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मे



सारी बरबादी के पीछे भय सृजन की प्यास है
मिट्टी राख हुई तो क्या अब भी जीवित रिश्वास है
तेरे म्बर मे दृष्टि, दृष्टि मे गीत, रूप में माधुरी
और चला चल, आने वाला कल म्मारु-इतिहास है
जीवन-नदी किनारे मृदा चीखता

एक बार तेरी धडकन पर झूमकर

जीवित कर दूगा शमशानी लग मे
फिर तो चलता ही जाऊँगा निशि-दिन बारह मास मे



१६

आज मास मुझे है मिली,
और पूनम तुझे है फली
किस पहर तक मुझे ?

सर्जना को मिटाता प्रलय
 बीतता जा रहा है समय
 गाँव मेरे लिए धूल है,
 और तेरे लिए फूल है,
 किम नगर तक मगर ?

नीर मे पीर की गन्ध है
 मीन का कब्र नयन बढ है
 नाव मुझको निरम्ब झूमती,
 और तुझको लिये घूमती,
 किस लहर तक मगर ?

अप्र नहा सो रहे भू-गगन
 मुन रहे है हमारे कथन
 एरु मे अँसुओं का वजन,
 और तू स्वप्नवाही नयन,
 किम नज़र तक मगर ?

१७

पीता हुआ अंधेरा बढ़ता जाता हूँ
मे परत पर परत चढ़ता जाता हूँ
जला गीत के दिये
मीत के लिये
चाँद, तू नेह चाँदनी ढाल रे !

मैं तीरथ को निम्न पड़ा हूँ राह पर
 मन की धूप मिली है तन की छाँह पर
 चुपके-चुपके पूज रहा हूँ प्रेरणा
 मिन्न छोड़ आया हूँ निटुड़ी बोंह पर
 सावन पर तो बहुत लगाये आशा हूँ
 पर यह कहना कठिन कि कितना प्यासा हूँ
 भरी घटा की नदी,
 लहर से लड़ी,
 तीर पर है मछुए का जाल रे !



गुज़र चुकी है धूप सुनह की, शाम की
 थमी हुई हल्चल जीवन-सम्राज की
 समय मिला चिन्तन, सुख-दुख-इतिहास का
 रोएँ-गाएँ मज़ा अपने राम की
 चला सफर में, दिया जला तो पवन हिला
 निहार जुगनू उडा, शल्भ की तरह मिला
 उसे रोशनी मिली,
 भ्रजा-सी खुली
 नाव पर उडा सलौना पाल रे !

तुझे पना क्या मन के हाहाकार का
गीत नहीं है रुज़्ज़ा किमी के प्यार का

मरते-व्यपते जीवन का परिणाम ये
म्याद फभी मिल सज़ा नहीं त्योहार का

यह दीपक है, इसको जलते जाना है
मै पथी हूँ, मुझको चलने जाना है

प्रगट जहाँ मज़िले,
सम्हल कर चलें

वहा पर कहीं लुपा है काल रे !



१८

उठा दिया है पाँव आज मैंने अलब्रेली राह पर
गिरने लगूँ, पाँह दे देना
तुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थकने लगूँ, छाँह दे देना

विष का चोंद नहीं चाहा तो नयनो मे भी प्यार न उमडा
 रही चोंदनी फीकी-फीकी सपनो का समार न उमडा
 रूठी मुझमे रजनीगन्धा औ' नाराज हुई गफाली
 लेमिन मुझको रही फल्पती मधर्पित मावस की डाली
 मजिल परेशान हे मेरी उठती हुई निगाह पर

गिरने लूँ, गॉह दे देना
 बुझने लूँ, म्नेह दे देना
 थरुने लूँ, छॉह दे देना



जो जीने को ही जीते हैं, उनके लिए समस्या हैं मे
 जो विष पीने को जीते है, उनके लिए तपस्या हैं मे
 जो भ्रम म तटस्थ चुप रहते, उनकी दृष्टि अर्द्ध-अन्धी हे
 जो न रहे हर भीड-भाड में, उनमें मेरी कृति बन्दी हे
 मेरी ज़िद्दी क्रलम न चल पाती गैरो की चाह पर

गिरने लूँ, गॉह दे देना
 बुझने लूँ, म्नेह दे देना
 थरुने लूँ, छॉह दे देना



अनगिन इद्र-धनुष टूटे थे, जिन सपनो की रोंगोली पर
 वे सप मैने खुद ही म्नाहा कर डाले पिछली होली पर
 मरस्वती को प्रथम मनाया, लक्ष्मी रूठी दीजाली मे
 आधी मे उड गये फूल, पर गन्ध रही पूजन-थाली में

आज उसे म्वर दे निम्बराया मैने दढ-बराह पर

गिरने लगूँ, रॉह दे देना
बुझने लगूँ, म्नेह दे देना
थरुने लगूँ, उॉह दे देना



अपने लिए जिऊँ तो मृत हूँ, मै हूँ अश्रु सभी आँखों में
तुम्हें प्यार करने सत्र बारा, तुम ही एक दिसे लागो म
उस दिन तुम बोलथे,—रुहते लोग सभी हर घर-आँगन के
तुमने इन गीतों के पीछे सपने तोड़ दिये जीवन के।

एक अजब इत्ज़ाम लगा है मेरे शाहन्शाह पर

गिरने लगूँ, बॉह दे देना
बुझने लगूँ, स्नेह दे देना
थरुने लगूँ, छॉह दे देना



१६

एक मस्ती मिली, दर्द भूँछ, मगर
 नाचती ही नहीं मन-मयूरी अभी
 अश्रु ने जो कही, प्राण ने जो लिखी
 वह कथा गीत की है अधूरी अभी

पुत रही चॉदनी आज आकाश म
 पर हृदय का गगन तो सजल ही रहा
 पेड से है बंधा साध का चद्रमा
 मेघ रेफिन मन्दल-वल निमल ही रहा

आज ऑम्न रहा और सपने कहीं
 मिट न पाई, रही एक दूरी अभी
 चार श्रोता जहाँ, आठ दर्शक जहाँ
 वह मभा गीत की है अधूरी अभी



गवाचना चाहते एक मुम्कान तो
 फूल म कुठ खिलो, धूल में कुठ मिलो
 मॉगना चाहते एक प्रदान तो
 मेघ ननकर चलो, नीर बनकर ढलो

कौन अरमान परा तुम्हारा हुआ
 मॉग किसकी हुई है सिद्धूरी अभी
 इस तुम्हारे उँचारे सपन के लिए
 सहिता प्यार की है अधूरी अभी



टटता जा रहा मन मधन चोट से
 पृथता जा रहा गीत का बंध है
 लेखनी चल रही आज पतवार-सी
 सूब मझधार का मिल रहा म्याद है

हर भयङ्कर लहर एक नागिन बनी
 तैरती हे कल्म की मजूरी अभी
 नाव के रान की प्यास जिमको लगी
 सभ्यता विद्य की वह अधूरी अभी



यह सही है न कुछ से बहुत हे हुआ
 किन्तु कितना अधिक आज भी शेष है
 रूप के, प्रीति के, गीत के राज में
 अनुमुना, अनकहा, विद्य है, देश हे

जो पुगनी शपथ भिन्नी उन फिरी
 मोडना अश्रु उसके जरूरी अभी
 जो गगन को मिली, पर धरा को नहीं
 वह सुधा पात्र की है अधूरी अभी



टपडवाती हुई ऑम्ब-सी जिन्दगी
 रो भरी तो मिला एक ऑंचल उसे
 जम सिमकता हुआ अश्रु उसमें गिरा
 तब लगा है मिला एक मरथल उसे

जो झुल्यते दिनों में श्रमिक को मिले
 वह नटुत दर शिमला-ममरी अभी
 फूल जिसम खिला, फूल जिसमें मिला
 मान्यता बूल की वह अधूरी अभी



लग रहा ऐसा कि नभ के पाम भी मस्तिष्क है
 पर मन नहा है
 चोंद-सूरज गीत मुनने को किरन-रथ रोक दें
 ऐसा अनोखा क्षण नहीं है
 जो झकोरा भी हवा का, हाँफता-सा जा रहा,
 उसको दिशाओं से गरज है
 जो न सुनती दूसरो की, उस घटा के गीत की भी
 तो अलग अपनी तरज है
 इस तरह दूरी गगन में और मुझमें उड़ रही,
 यह बात लिखता जा रहा हूँ
 गीत की अपनी बही में, विश्व के चातावरण का
 हो रहा आयात औ निर्यात, लिम्बता जा रहा हूँ



पेड़ बढ़ने में लगा है, फूल मिल्ने में,
 शिकारी भृङ्ग अपनी ताक में है
 गन्ध बौराई चली है, पात पर शयनम डुली है
 ओम मेरी ऑग्न में है
 तमतमाती धूप भी सघर्ष के आकाश में
 भारी तपस्या कर रही है
 और छाया की न पृछो, जो कि अगणित वार क्षण में
 जी रही है, मर रही है

इस तरह कोई न कोई काम अपनी व्यस्तता का
 है सभी के माथ, लिखता जा रहा हूँ
 पीर की नदिया किनारे घाट पर दृग के भरा जो
 नीर, उममे धो रहा हूँ आज मनके हाथ
 लिखता जा रहा हूँ



जड़ती है वायु तरणी से कि तरणी जल-लहरियों से,
 लहरियों दीर्घ तट से
 उठ रहे हैं, गिर रहे हैं, गोर करते ज्वार-भाटे
 फटते मानो लहर के पाप-घट से
 और मेरी जिनन्दगी का गम भरा मगीत, खुद में डबकर
 बेमुघ हुआ है
 नाम मेरे गीत की तूफान से टकरा रही, पर
 मोंगती निमसे हुआ है
 इस तरह सब ओर है मर्घर्ष का विघ्राट झझावात
 लिखता जा रहा हूँ
 काटती मज्जवार नाका, व्यग करता है मितारा व्योम का
 अवदात, लिखता जा रहा हूँ



हो चुका घायल बहुत, तत्र गीत के इस प्राण-पथी को
 मिले पथगौर, जो घायल म्वयम् है
 दूसरा जन हो मुसीबत मे, कटो मत पीर खुद की,
 हों यही प्रचलित नियम है

मजिलो तरु जत्र पहुँच होगी, मिलेगा सुख न इतना,
 है कि जितना टुग्व टगर मे
 क्योकि लापरवाह हे, परवाह से मेरी, जगत,
 सारी प्रकृति, धुँधले पहर म
 इस तरह म हँ अकेला, गीत रचना कार, लेकर
 आज जीवन-कल्प की आशा-भरी मौगात
 लिखता जा रहा हँ
 सिर्फ़ टम उम्मीद पर, होगी रुभी तो नेह सी
 जीवन-मयी बरसात,
 लिखता जा रहा हँ



है पिछी शतरुज जीवन की, लगी सघर्ष की जत्र शह,
 हुई तत्र कल्पना की मात
 लिखता जा रहा हँ
 जय-निनादों मे समय के, जारही किस रूप की बारात
 लिखता जा रहा हँ



२१

किसी स्वप्न को खोज लाने डगर पर
उतारा गया है अकेला मुझे
कहीं का दिया हूँ, किमी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

चला पर्यटन के लिए हस जिम क्षण
हुई हसनी जुठ रआसी-रआमी
न मौसम सुहाया, न त्यौहार भाया
समा-सी गई नीड-भर में उदामी

नई कोपलें जुठ समझ ही न पाई
घुली रोज़ सी नीड निर्दाष दृग म
पिता किस भयावह डगर पर उडा है
उन्हें क्या पना इस वडे व्यस्त जग मे

यहाँ के किमी दीप से स्नेह मॉगो
कहेगा, न देना उजाला मुझे
कहीं का दिया है, किसी का पिया है
सफर पर समय ने ढकेला मुझे

दुआया हुआ स्नेह लौटा बहुत कम
यही गम मुझे इस सफर में अखरता
भगर मोचता हूँ, कसौटी मिली है
चलूँगा निखरता, चलूँगा निखरता

अभी रेलगाडी चली जा रही है
खटर-खट खटर-खट घने जगलो मे
कहीं खेत मुख के, कहीं रेत दुख की
कभी मन किरन मे, कभी बादलो मे

लेसनी-बेला

धरे शीश गागर, भरे पीत ऑचल
मधुर मौन कुसुम, अगरु-गन्ध-चन्दन
हम मेष की सीढ़ियों से थिरक कर
चली जा रही लीपने गीत-आगम

जिधर आँव फरी, उधर ही निकलता
दिया एक रगिन रेल मु
कहा का दिया हूँ, किसी का पिया हूँ
सफर पर समय ने ढकेला मु

मुझे हाट उठती दिग्घी एक, लेकिन
 भरा भी लगा एक मेला मुझे
 कहा का दिया हूँ, किमी का पिया हूँ
 सफर पर समय ने ढकेला मुझे



मिठा गीत म हूँ, बना गीत मे हूँ
 मिठा गीत के और चारा नहा हे
 उन्हे प्यार करता कि चिनको जगत ने
 दुलारा नहा है, पुकारा नहा है
 उन्हा के लिये गीत मेरी प्रियता
 उन्हा के लिये मे तकाजा समय का
 नदी-पर्वतो-शीहडो-मरुथलो से
 चला पृष्ठता अर्थ सर्जन-प्रलय का

मुझे लग रही जिन्दगी एक पूजन
 कला-आरती-दीप-वेला मुझे
 कहा का दिया हूँ, किमी का पिया हूँ
 सफर पर समय ने ढकेला मुझे



विरह एक पथ है, मिलन एक मज़िल
 पडी ओंधियो नागिनो-सी गले म
 अगर हो सके, तो सुधा बन चलो तुम
 मगन हो महादेव के काफिले म

धरे शीश गागर, भरे पीत आँचल
मधुर मौन कुकुम, अगरु-गन्ध-चन्दन
हवा मेघ की मीठियों से थिरक कर
चली जा रही लीपने गीत-आगन

निधर आँख फेरी, उधर ही निरुलता
दिखा एक रगीन रेल मुझे
कहा का दिया है, किसी का पिया है
सफर पर समय ने ढरुल मुझे

२२

रो-गोकर सिन्दूर टूँडती मधुऋतु मेरे द्वार पर
वाग सजे क्या, दीप जले क्या, और मने त्योहार क्या

सागर-दृग मे नीर भरे वह व्योम है, यह धूल है
 ग्रननम से बोझिल-बोझिल हर पात है, हर फूल है
 धुटती-धुटती साँसों-सा रुक-रुक कर चलना है पन
 धरती घूम रही लपटों में, करती सपनों का हवन
 शरद निशाँ गगन-माग्वचों मे युग-युग से बन्द है
 हेमन्तों की गति-त्रिधियो पर वामन्ती प्रतिबन्ध है

मन का उत्पन्न बलि देता धडकन के हाहाकार पर
 गीत छिडे क्या, प्रीति हँसे क्या, रूप करे सिंगार क्या



भटका-भटका सा है मनवा, धीमा-धीमा राग है
 मद्धिम-मद्धिम गति जीवन की, फिर भी मनमे आग है
 मेरी उजली दोपहरी पर फिर सन्या की छाँह है
 सोच रहा जग, मुझको पावस की कितनी परवाह है
 मे नकों की बट-पूजा पर स्वगा का वरदान हूँ
 झाँकी मजी दूर मंदिर में, बिन-देखे हेरान हूँ

स्वप्न नहा आँसू प्रहरी है जब दृग-वन्दनार पर
 दर्शन कठिन महाजन को, मुझ हरिजन का परिवार क्या !



कभी-कभी मेरे सिरहाने आ जाती है चाँदनी
 नींद-भरे गुमसुम सपनों को मिल जाती है रागिनी
 सोचा करता हूँ दुनियाँ मे सुख का नहा अभाव है
 कहीं धूप का पलडा भारी, कहा भयानक ठाँव है

लेकिन अलग न होसकता मे, खुद अपनी आवाज से
वचित करना बहुत कठिन है मुझे सिर्फ अन्दाज से

क्योकि बहुत से हृदय भरोसा करते मेरे प्यार पर
उनका दरद भुलाकर मेरे जीने में है सार क्या



मिट्टी का रेशा-रेशा असहाय है, निरुपाय है
गिट्टी तोड़े जाता रोज़ी-रोटी का समुदाय है
कुजी लिये तिजोरी फी, अन्याय देश म घूमता
कल्ल किये सन्चारि का, ऐग्याग झूठ है झूमता
सोना-चादी मखमल-रेशम-सा निकता ईमान है
धूल उड़ रही राहो म भटका-भटका इन्सान है

अनगिन नलमे आस लगाए, खुले चौर बाज़ार पर
मुझको सपने की आया मे रहने का अधिकार क्या



मरथल समझ न पाता है मेरी मधुमासी प्यास को
समय घसीटे लिये जा रहा मेरी जीपित लाग को
मै बहार की कल्ल कल्पना जैसे उस मसार में
जो अब तक मानव की किम्मत बंधे है तलवार में
जहाँ मय-युग लौट रहा है मिद्वान्तो की आड म
नया-नया ईंधन पडता है, सुल्गे हुए पहाड म
मिट्टी की सुधियों साधे है ज्वालाओ के ज्वार पर
तट पर नैठा रह जाने दें मै उनको मझार क्या



२३

जब भी गिरा एक ओख कहीं,
चुपचाप तुम रह सके तब नहीं,
भटका किये वादलो-से दुखी हो

लेकिन अलग न हो सकता मैं, खुद अपनी आवाज से
वचित करना बहुत कठिन है मुझे मिर्फ अन्दाज से

क्योंकि बहुत से हृदय भरोसा करते मेरे प्यार पर
उनका दरद मुलाकर मेरे जीने में हैं सार क्या



मिट्टी का रेगा-रेगा असहाय है, निरुपाय है
मिट्टी तोड़े जाता रोज़ी-रोटी का समुदाय है
कुजी लिये तिजोरी की, अन्याय देश में घूमता
फूल फिये सन्चार्ड का, पेय्याश झूठ है श्रमता
सोना-चाँदी मगवमल-नेशम-सा निकता ईमान है
धूल उड़ रही राहों में भटका-भटका इन्सान है

अनगिन फूलों में आस लगाए, खुले चोर बाजार पर
मुझको सपने की छाया में रहने का अधिकार क्या



मरथल ममझ न पाता है मेरी मधुमासी प्यास को
समय घसीटे लिये जा रहा मेरी जीवित लश को
मैं बहार की कर्क करपना कैसे उस ममार में
जो अब तक मानव की किम्मत बँधे है तलवार में
जहाँ मय-युग लौट रहा है मिद्धान्तो की आड में
नया-नया ईंधन पड़ता है, मुलगे हुए पहाड में
मिट्टी की सुधियों साधे है ज्वालआ के ज्वार पर
तट पर बैठा रह जाने दूँ मैं उनको मजवार क्या



२३

जब भी गिरा एक ओसू कहीं,
चुपचाप तुम रह सके तब नहीं,
भटका किये बादलो-से दुखी हो

तुमको भुलावा दिया हर दिया ने,
 लालच दिया अन्धकारी निशा ने,
 लेकिन दिखा कौपता जग दिया,
 तुमने उसे प्यार रति-सा किया,
 तब वह खिला एक सूरजमुखी हो



दिन पजनो के रहोगे अधूरे
 तुम पर हँसे मन्दिरो के कंगूरे
 लेकिन तुम्हें जब निगो वह व्यथा,
 जिमकी ग्ही अनमुनी ही कथा,
 तुमको लगा काश यह भी सुखी हो



पीछे चला आ रहा कारवों था
 तुमने यही मिर्च उससे कहा था
 पूरा करो यह सफर, हम-सफर,
 हम तुम चले उस निमिष के नगर,
 मजिल कि जिसके चरण में झुकी हो



२४

सपन सभी जो,
 रुदन सभी जो,
 खिले नयन मे, नही तुम्हारे
 मुझे प्रेरणा
 मिली बहुत कुछ,
 मगर नही सन, नदी-किनारे

नहीं तुम्हारा खयाल आया, निहार पूनम खुले गगन की
 सदा नहीं तुम दिये सुनाई, बहुत सुनी रागिनी चमन की
 सुबह हुई तो मुझे लगा ये, निशा समय की गुज़र चुक
 नयीन-शिशु-शी लगी लुभाने, प्रसन्न मूरत खिले सुमन की
 जवान किरनें,
 लगीं थिरकने,
 पलक उठाए, अलक सँवारे
 मुझे प्रेरणा
 मिली बहुत कुठ,
 मगर नहीं सन, नदी-किनारे



उजड़ गई बस्तियों कि जिनकी, झुलस झुलस भूख की चिता में
 निगाह रोई, रहे न आँसू, नयन मरुस्थल बने व्यथा में
 अधर पियासे रहे, अधूरी रही आरजू, लुटे श्रमों
 उन्हें विसारा गया, दुलारा गया नहीं, विश्व-सभ्यता में
 उन्हें भुलाकर,
 उन्हें रला कर,
 विहँस न सकते, नयन हमारे
 मुझे प्रेरणा,
 मिली बहुत कुठ,
 मगर नहीं सन, नदी-किनारे

मिलन तुम्हारा मुझे लुभाता, निरह तुम्हारा मुझे दुखाता
 मगर समय की थपेड खाता-हुआ मनुज भी मुझे बुलाता
 सदा सँदेशा तुम्हें पठाऊँ, घुमड रहे सावनी घनो से
 तुम्हीं कहो जन बदल रहा युग, यही मभी क्या तुम्हें सुहाता

कहो स्वयम्तुम
 न जी रहे क्या,
 कठोर सघर्ष के सहारे
 मुझे प्रेरणा
 मिली बहुतकुछ,
 मगर नहीं सब, नदी-किनारे

कहीं उजडता, कहीं सँवरता, भविष्य, इस देश के नित्य में
 दिवस-निशा-जिन्दगी डगर पर, कभी सृजन में, कभी प्रलय में
 लगी हुई है असख्य तोपें, खुली हुई यैलियों अनर्था
 तुम्हीं कहो क्या लिखूँ कि जब एशिया उठा इस कठिन समय में

उमड रहे,
 क्राति के बटोही,
 चमक रहे, शान्ति के सितारे
 मुझे प्रेरणा
 मिली बहुतकुछ,
 मगर नहीं सब, नदी किनारे

२५

इस दिये के माथ पर यदि स्नेह का अभिप्रेक हो तो
यह भी पात्र जलन का हो सकता जग के इतिहास में
ध्वज और चमक सकता है इस फेले आकाश में

किसे पता इसके ही हाथो होना हो अनमोल सृजन
कौन कहे इसकी किम्मत मे हो तुमसबसे अधिक वजन

मरा-खपा तूफानो में यह रेगिस्तानो का पौधा
देना हो यदि म्नेह इसे तो करो नहा कोई सौदा

तुम बहार हो और तुम्हारे चरणो मे यह सावन है
जो पलाश-वन से गुजरा हो, यह वह झरना पावन है

इस उजागर स्वप्न के नयनों का आँसू पोछ लो तो

लोहू भी ठे सकता है यह मरणोन्मुख उल्लास में
नई रोशनी भर सकता है, बुझते हुए प्रकाश में



इसमें भी दम हो सकता है, तुम वीरान कहो चाहे
रचनाकारों की बिरादरी मे अनजान कहो चाहे

यह गीतो की गागर मे सागर बनकर लहराता है
जाने कहाँ-कहाँ से प्रनिधरनि आती, जत्र यह गाता है

बरस-बरस जाते है बादल, फूट फूट पडती कोपल
डोल-डोल जाता है चातक, बोल-बोल उठती कोयल

इस सुबह के गीत को यदि राई-भर भी प्यार दो तो

यह दुख के पर्वत दो मरुता सुख की हर साँस में
यह सयोग जोड सकता है हर टूटे विश्वास में



तुम किस राज-भवनकी मज़िल, यह किस मिट्टी का ढेला
तुम जिन तूफानों से बचते, यह उनमें पल-पल खेला

नहीं चाहता दया-कृपा यह, वह तो ढोंग तमाशा है
भूखा है बस यह दुलार का, और स्नेह का प्यासा है
स्वप्न इसे मगलाचरण है, ऑम्नू राम-कहानी है
इस ददलि की टुनियों में तो पानी ही पानी है

इस किरन की पखुरी पर किरनों का आलेख हो तो
यह भी कुठ सौरभ भर सकता है सूने मधुमास में
तुरत टाल सकता है शबनम जलते हुए पलाश में



२६

सुख भी छूटा, दुख भी फूटा, हुआ दहरी-द्वारा रे
तूफानो ने शोर किया पर तेरा गीत न हारा रे
डगमग करते पैरो वाले ! पथ में रुकना भूल है

तेरे वृजने का तो कोई अर्थ नहीं
 तुझ पर अम्बर का चन्दा न्यौंठावर है
 तू उन सात सितारों का धुनतारा है
 मज़िल से पड चुकी कि जिनकी भोंवर है

सोच-समझ कर लौट गया है तुझ तक आ अँधियारा रे
 नेह-पत्र सावन का लाया बादल का हरकारा रे
 आँसू से भीगा-भीगा आँधी का धूल-दुकूल है



सपना तेरी नाव कि जिसका माझी तू
 नयन-महासागर के गहरे पानी में
 तूने तट की झाँकी जैसे पा ली है
 अनचाहे तूफानों की अगवानी में

तुझको उठती हुई लहर ने मिटते हुए निहारा रे
 तट पर जागी हुई भोर ने अपना रूप सँवारा रे
 बड़ी दूर से देख लिया उसने तेरा मस्तूल है

आई है जो बाढ़ उतर भी जाएगी
 आँसू ही तेरा दर्पण बन जाएगा

सघर्षों की चलनी ही कुछ ऐसी है
जिससे जीवन का सौरभ छन आएगा

जैसे गंगा म मिलने जाती जमुना की धारा रे
रात-ढले पर क्षितिज-कुँ मे ढुलके उसका पारा रे
गसे ही शोके में उडता पगडण्डी का शूल है



२७

मन ! तुम न टूटो अभी हार कर,
ऑवी न हरदम रही द्वार पर,
तुम भी न दुर्बल रहोगे सदा

दी है चुनौती तुम्हें शाम ने
हँसता हुआ काल है सामने

शर ! तुम न छूटो अभी रोष से,
गुण छुप न पाते किसी दोष से,

तुम भी न दुखड़ा कहोगे सदा



गहरा बहुत नीर है दृष्टि का
जलयान सक्षिप्त है सृष्टि का

दृग ! तुम न फूटो, रहो गागरी,
हर क्षण न गहरी व्यथा बावरी,

तुम भी न तृण से बहोगे सदा



तुम आरती गा रहे, भोर है
सागर क्रिये जा रहा शोर है

स्वर ! तुम न रूठो अभी मंत्र से,
होता न कुछ घोष के तंत्र से,

तुम भी पराजित न होगे सदा



नम हो कि मैं जानते हैं सभी
 गहरी बहुत है तुम्हारी व्यथा
 आकाश के हर दुखी मेघ ने
 मुझमें कही है तुम्हारी कथा
 वे जो कि तुमसे अधिक है करुण
 जो चाहते हैं तुम्हारी शरण
 उनकी सुबह ढूँढ़ना है तुम्हें
 हर एक मन के चरागाह से



मझधार में तुम पड़े नाव-से
 पर दूसरों के निकट कूल है
 हर डबडबाती हुई आँख को
 दुखड़ा सुनाना बड़ी भूल है
 उसकी शिकन लो स्वयम् माथ पर
 उससे कहो ज़िन्दगी है अमर
 तन का दिया प्रश्न है कर रहा
 मन पर बनी एक दरगाह से



तुमको नहीं चोंदनी मिल सकी
 मेरा कहाँ चन्द्रमा दास है

इस ज़िन्दगी की विकल सृष्टि में
किमने रचाया कहाँ रास है
अपनी सुनह-शाम से भी परे
दुनियाँ करोडो चरण है धरे
जीवन सदा पूर्ण होता नहीं
केवल प्रणयवान निर्वाह से



२६

निशा के राजकुँवर !
चला तू आज किधर,
दिशा की पलको से
उठा कर चन्दरिमा

उजाली किरन-किरन है रूप निम्बारे
 अभी से उसे विरह तू नहीं सिखा रे
 किसी ने तुझे निरख कर गीत लिखा रे
 पवन है रामुरिया
 अरे ओ कान्हरिया ।
 गगन के गोकुल में
 रही राधा शरमा

●

नयन की नगरी गगरी लेकर प्यासी
 धरा से रूठ नहीं सपने आकाशी
 कठिनता से मिलती है पूरनमामी
 चुनरिया साध लिये
 सधा उन्माद लिये
 डगरिया पनघट की
 कहे तेरी महिमा

●

किसी देवालय का तू देव अनोखा
 कि जो भी आया, तूने कभी न रोका
 बना है सगमरमरी राम-झरोखा
 अभी चल रही कथा
 किसी को नहीं पता
 कभी खुद मन्दिर से
 निरुल जाती प्रतिमा

३०

कुकुम निखेरती सुग्रह-सुहागिन गाती है
 भग मॉग-मॉग सिन्दूर,
 न बेठो दूर,
 कि फागुन गा लो रे !

पीले सिंहासन पर सूरज बैठा जमकर
 वासन्ती राजतिलक के फल जगमगा रहे
 कोयल-पपीहरे उठते मगल-गायन को
 उल्हाही पवन शकोरे ताली बजा रहे
 नाचते-नाचते तुतली तितली आती है
 नूपुर में जय-जय कार,
 नयन में प्यार,
 कि होश सम्हालो रे !

रेशम पाटल के लालम शरम शरोखे से
 मधुच्छतु रानी मधुपन का उत्सव देख रही
 वह प्यार-प्यार में बेणी की रजनीगन्धा
 चुपके-चुपके मानसल भीड़ों पर फँक रही
 मौरो की टोली फूलों को समझाती है
 तुम जानो जी की प्यास
 लगी है आम
 हमें अपना लो रे !

कचन फिरनें पानी से रास रचाती है
 सतरंगी सपने साध लिये मँटराते हैं
 रसवन्ती बाहें सिमनी हुई लजाती हैं
 श्वासो के अश्वारोही घिर-घिर आते हैं

चंचल बहार रंगो में भींग नहाती है
गाती है शयनम गीत,
मन्दिर है प्रीति,
नहाने वाले रे !



फूले पलाश-से गीत बसन्ती छाया में
पतझर का बादल यहाँ नहीं घिर पाएगा
ममता के आलम की मिट्टी मधुमासित है
इसका कन-कन यौवन का गीत सुनाएगा

मधुमत्तु कुजों पर जीवन-बेल लगाती है
दावानल का उत्पात,
अँधेरी रात,
उसे समझा लो रे !



३१

कि जग नील-नभ में चमकता सितारा
बहुत याद आता जुहू का किनारा

पमारे गगन बीच सुसुमार बाहें
 हज़ारों हिलोर उठाएँ निगाहें
 निखरे मसुद्री सपन है पनन में
 कुतूहल भरे दर्शको के नयन में

कि जन झमता है किरन का नज़ारा
 हृदय सोचता है कि कह दे 'दुबारा'

गरम रेत से त्रम्त पीहड अचचल
 यहाँ आ गया है कहीं का मरमथल
 ग्विली चाँदनी है, चरण धो रही है
 झुलमती व्यथा अनतरल हो रही है

किसी दिन, किसी ने, किसी को पुकारा
 पलक को उठाया, अलक को सँवारा

जुही की कली-सी महकती जुहू है
 किमी कोकिला की मचलती उहू है
 किमी गूँजते-गीत की रागिनी है
 किसी व्योम की झूमती चाँदनी है

कि जन ज्वार करता मिलन का इशारा
 नयन में छलकता जलधि-नीर खारा

सलौने गगन की, महकती हवाएँ
किमी भेघ के बोझ से दब न जाएँ
न गडव किमी वूँद से फूट जाए
कही वज्र नभ से नहीं टूट जाए

कि जन यह समा है, मधुर मौन प्यारा
किसी तीसरे नेत्र ने क्यो निहारा



३२

सावन ने तो ओसों भर डालीं बादल से
देखें बहार किस उदयाचल से आती है

वन-वन कर शन्द्रधनुष कितने ही टूट गए
 शर-भी पुरवाई चली गई नक्षत्रों में
 प्रिजली का मन आहत हो-हो कर तड़प उठा
 औ' बरस उठा बूँदों के भेजे-पत्रों में

कुठ ऐसा दर्द लुटाया उसने आँचल से
 पीडा की बुन ही हर पायल से आती है

•
 इवे सपनों के खेत किसी जमुना-जल में
 बह गए गाँव के गाँव बाढ़ आई ऐसी
 अमराई डूबी, इवे उसके झूले भी
 सागर से मिलने नदिया इतराई ऐसी

सन कुठ गोरु रोनेवाले से पूछो तो
 अज कौन हवा किस मलयाचल से आती है

•
 ऐसा घेरा है बरसाती अधियारी ने
 सघणों ने - गहनाई ऐसी तोडी है
 रचना नी मगल-वेला फिर तुहरे में है
 करनी ने अपनी म आखिर क्या ओडी है

फागुन के लिये मिर्होमन छोडेगा सावन
 आवाज़ यही मन की मज़िल से आती है

बादल से ऑँव मिला कर चलने वाले पर
जन त्रिजली गिरना ही है तो फिर गिरने दो
गीतो की माटी में यह भी मिल जाएगी
चाहो तो मधुसूतु म भी बादल घिरने दो

मेरी धडकन का भ्रमर उड़ेगा गुन-गुन कर
ऐसी सुगंध पाटल-पाटल से आती है



३३

ठण्डी-ठण्डी छों है
मीठा-मीठा राग है
घरती जैसी आँस में
सपने जेसा बाग है

हल्की-हल्की दूज है
 चन्ती-फिरती छोंव है
 उठती गिरती है हवा
 भूला-भूला गोंग है

खोई-खोई धूप की
 बिखरी-बिखरी प्यास है
 झरना-वाली बौह में
 पर्वत क्या, आकाश है

नीला-नीला व्योम है
 नीली-नीली रात है
 भीगे-भीगे फूल है
 क्षीनी-क्षीनी चात है

जगल की सुनसान में
 प्राणों-सी गहराइयाँ
 गहरी-गहरी कन्दरा
 आहो-सी तनहाइयाँ

ठण्डक की अँगड़ाइयाँ
 गर्मी मेरी साँस में
 जैसे पत्ता एक ही
 कोट रूले ताश में

चलती-फिरती बिन पर
 पत्तों का संगीत है
 देखें सुनता कौन है
 किससे किसकी प्रीति है

बूँदापोंदी देखकर
 आतप है पाताल में
 बूँदों की ही भीड़ है
 मैदानों के 'हॉल' में

पर्वत मेरा मच है
 छिड़ती जिस पर रागिनी
 गाता हूँ मैं झूमकर
 सुनती सारी यामिनी

दुहराती मगीत हैं
 ऊँची-नीची वादियों
 पतली-मी पगडण्डियों
 टेढ़ी - मेढ़ी घाटियों

आँधी है झरझरती
 झुकने वाली डाल को
 जुटमी करता तग है
 जैसे हर फगाल को

दृश्यों के मैलाव में
 रंगों की भरमार है
 स्वरों की आवाज़ में
 गूँजा पारावार है

फिमल्य-दुल्हन टोल्ती
 भारत के हिल्लोल में
 परिवर्तन के चिह्न है
 जगती के भूगोल में

परत है या मेव है
 बादल है या शृङ्ग है
 कहते कुछ बनता नहा
 किसका कैमा रङ्ग है

बादल और पहाड के
 अगो में है भेद क्या ?
 दोनो ही मजदूर है
 बहता है ना स्वेद क्या ?

चश्मा हर पापाण से
 फूटे मन के स्नेह-सा
 पेडो के झुफ-झूम में
 बन जाता है गेह-सा

ऊँची-नीची खाड्यों
 टेढ़ा-मेढा रास्ता
 लगता है जैसे हमें
 इनसे ही है वास्ता

कैसे कोई छोड़ दे
पाकर एमे कोप को
वर्णन करना है कठिन
लिख चाहे सन्तोष को

चट्टानों की भीड़ है
साया है चट्टान की
बहती फेनिल धार है
कल-कल झर-झर गान की

भागी आती धार है
जैसे मेरी प्रियतमा
मिलने को इठला रही
पाकर मन्ती का समों

परत चारों ओर है
वादी बीचों-बीच है
जिसमें भर कर मेघ भी
मन को लेता खींच है

मे भी वादी में खड़ा
बोया-सा हूँ टोलता
कैसे क्या-क्या आँकलूँ
अपने मन में बोलता

इतनी ऊँची है नहीं
सिद्धान्तों की श्रेणियाँ
जितनी इस सुनसान में
लुटकी छवि की वेणियाँ

गलि आकाश पर
ममूरी का राज है
उसको आँसू पर नहा
अपने पर ही नाज़ है

किरणों का अभिपङ्गले
रानी बैठी गान से
मेरी ओर निहार कर
कहती इतमीनान से—

खनी-बेला

“आया तू परदेस से
मेरे ठण्डे गाँव में
फिरनो जैसे गीत को
बिखरा मेरी छाँव में

भावो के बरदान से
मेरा माथा चूम ले
मै भी तुझमें झूम लूँ
तू भी मुझमें झूम ले

मै तो तन की बीन हूँ
तू है मन का गीत रे
मन के गीतों के बिना
होती है कन प्रीति रे

आए मेरे पास तो
डूबूँ तेरे गीत में
जीतूँ तेरी हार में
हारूँ तेरी जीत में

सिंहासन खाली पडा
राजा तेरे वास्ते
आ जा भँवरे की तरह
फल-फूलों के रास्ते

कैसा अच्छा व्योम है
खिलता मेरा फूल है
झूला मेरी डाल का
दुनियाँ जाती झूल है

आमत्रण की बात पर
पहली-पहली वार है
तुझको यदि स्वीकार है
मुझको कन इन्कार है

जाने कब से हूँ ढूँढती
तुझको मै आकाश में
आखिर तू मिल ही गया
मेरे ही आवास में

छेड़ जरा सगीत तू
पूछ ज़रा मन की व्यथा
देखूँ तेरी कल्पना
कहती है क्या-क्या कथा

झूम कि मेरी प्यास की
सीमाएँ हे टटती
देख कि मेरे स्नेह की
धाराएँ है फूटती

रानी के इस राज मे
राजा ! अपना गीत गा
मेरी बाज़ी हार कर
अपनी बाज़ी जीत जा

कैसा मीठा है समा
मेरे नीलम देश का
सानी मिलता है कहीं
मेरे लहरिल केश का

मेरी ठण्डी सोंस का
समझेगा क्या मर्म तू
अनबोला जो कुठ रहा
समझेगा क्या शर्म तू

आशीतल हो प्यार से
सावन है, मधुमास है
मेरे अन्धे प्राण पर
हरा-हरा आकाश है

चारो ओर बहार है
चारो ओर खुमार है
तू है, मैं हूँ, गीत है,
हरियाला सत्तार है

जीवन इस सत्तार का
चिन्ताओ से दूर है
यह यौवन का देश तो
स्वर्गों से भरपूर है

पारिजात खिलता यहाँ
नन्दन के सीमान्त में
गुजन करता टोल जा
भँवरे मेरे प्रान्त में

गीतों के चंचल भ्रमर
आमत्रण रस-पान का
किसको देता कौन है
विन-भाग्ये वरदान का

भूरे-भूरे शृङ्ग पर
जीवन-सी चट्टान है
जिस पर बैठा हंस है
पक्षो में तूफान है

परत-पेतो पर बिछी
हरियाली घनघोर है
यौवन-सी निर्बन्ध है
चंचल मन का मोर है

रूमानी आकाश का
फीरोजी सिंगार है
शेफाली-सी भूमि पर
ऊँचा तोरण द्वार है

एक बड़ी चट्टान ही
है प्रहरी के नाम पर
जो निर्मम निर्द्वन्द-सी
टयी हुई है काम पर

चलती-फिरती वीन पर
पत्तों का संगीत है
देखें सुनता कौन है
किसको किससे प्रीति है

ठण्डककी अँगडाइयों
गर्मा मेरी माँस में
जैसे पत्ता एक ही
कोई खेले ताश में

जगल की सुनसान में
 प्राणो-सी गहगड्यो
 गहरी-गहरी कन्दरा
 आहों-सी तनहाड्या

नीला-नीला व्योम है
 नीली-नीली रात है
 भीगे-भीगे फूल है
 झीनी-झीनी वात है



अम्बर ही तो झील है
 दर्शन ही तो प्यास है
 झरने वाली बाँह में
 पर्वत क्या आकाश है

हल्की-हल्की दूर है
 चलती-फिरती छाँव है
 उठती-गिरती है हवा
 भूला-भूला गाँव है



ठण्डी-ठण्डी छाँव है
 मीठा-मीठा राग है
 आँसू-जैसा फाल है
 सपने-जैसा वाग है



३४

नीली निशा के किनारे
सुलते बहुत से किवारे,
हैं किस महल के ?

सूखे नयन, तुम्हारे बिना, सुलगते रहे अंगारो-से
 अपना चमन, तुम्हारे बिना, सजा ही नहीं बहारो से
 फागुन मिला, बहुत मन हुआ, कि झूमे जरा पलाशो में
 आँवों मगर, रहीं अनमनी, सभी फागुनी तमाशो में

उप रहे, दुमाए रहे, मिठुड कर निशा-निशा म तुम
 गिल्लते रहे, महकते रहे, ममय की दिशा-दिशा म हम

ढोलक वही, मँजीरा वही, मुरलिया वही, वही नदिया
 सावन बिना, नहीं कुठ बना, अजन-सी रही सभी दुनियाँ
 मल्लुआ विकल, कि गाला विकल, रही सुधि किसी झगारे की
 ओढ़े हरी चुनरिया, खडी पहाडी नदी-किनारे की

तुम ही कहो कि कितने हिले मिले हो लहर-लहर में तुम
 भाते तुम्ही, सुहाते तुम्ही, निहार किमी पहर में हम

जुगनू ने तुम्हारे दिये, मृदगों बजीं, छिडी कजरी
 पिचली उठी, थिरकने लगी, वृदावन-जमुन-जली बजरी
 राधा नहीं, कन्हैया कहा, अलावें जली, सितारों की
 झाँगुर-धुनें, न कैसे सुने, कि रिमझिम छिडी फुहारो की

वूँद गिरा, पिलाते सुधा, धरा को नई फमल में तुम
 ओ हमसफर ! भटकते किधर, तुम्हें ढूँढ़ते असल में हम

३६

पगडण्डी से जाने वाली कृष्ण-गधु के वेष में
नई धूप का चीर उडाती आती युग की भोर है

पूरव के गेरए मच पर दृष्टि और श्रुति आमत्रित
 खेत-खेत में फमल झूम पड़ती अभिनन्दन पर है
 चरवाहों की मधुर बँसुरिया रह-रह कर यह गाती है
 नई दिशा के माथे पर कितना तुमुम एकर है

रगमच पर किसी नाट्य का परदा उठने से पहले
 उत्सुक चर्चागत कोलाहल-सा गगन-बुल का शोर है

•
 तुजो के विश्राम-गृहों में ढेर तलक सोनेवाले
 उजड़े-हुए रईसों-जैसे दिवा-म्वज्ज में लीन हैं
 कर्मठ हँसिया उठा, ज्वार के व्यर्थ गर्व को काटने
 अम्बर के सिंहासन पर सूरज राजा आसीन हैं

किसी सगठित सेना की अत्यन्त श्रेष्ठ टुकड़ी-जैसी
 किरन कर रही पीछा, भागा जाता तम का चोर है

३७

दृग की दुकान पर
मोती बिका नहीं
 ओंसे मिली तुम्हे
फिर भी दिसा नहीं

यह भी नहा सही
 वह भी नहा सही
 केवल तुम्हा सफल
 क्रीचड-भरे कमल
 कोई भ्रमर कभी
 तुम पर रुका नहा



मैने दिया दिया
 तुमने नहा लिया
 जो भी सजन हुआ
 तुमको वमन हुआ
 मन का अहम-वहम
 अत्र तक थका नहा



सूरज बहुत चढा,
 पर दिख नहीं पडा
 बोले 'चिराग है
 गाता बिहाग है
 पिछला सनेह ऋण
 अत्र तक चुका नहा'
 तुममे बसा मनुज
 अपना मना नहा



३८

जिस समय से रचा गीत है
वह नयन का नया मीत है,
इक दुल्हन की तरह

है उमड़ता बहुत आज प्यार
 देगता हूँ उसे बार-बार
 जिस घड़ी मे जला दीप है
 उम घड़ी से बसा द्वीप है,
 इक भवन की तरह



कुछ अजन-सी उठी एक प्यास
 है गज़ब आँसुओं का ल्यास
 जिस निमिष से खिला फूल है
 आँख में सज रही धूल है,
 इक सपन की तरह



उन्द ने भाव ने, छल किया
 जो मुझे यह नशा दे दिया
 मन अटकता हुआ चल रहा,
 मैं भटकता हुआ चल रहा,
 नील घन की तरह



३६

किमने निहारा ?
तम की परत पर परत तो चढी
पर न चमका सितारा !

सेरानी-बेला

११७

दीपक बुझा और सोचा कि फोंडे नहीं नामनेया
 सूने पडे मन्त्रों से पुजारी गण
 शेष श्री देवता की न सेवा
 मेरी ज्यथा को सुने निन
 मधुर ऑग्य में भर गया किम तरह नीर खारा
 किमने निहारा ?



किसने पुकारा ?
 भारी शिकायत रही नाम को
 स्वर न फूटा टुबाग !
 भूले हुए लोग थे एक युग में सुनी रागिनी को
 टूटी हुई बिन, रूठा हुआ तार
 भाया न कुछ सरगमों के धनी को
 मेरी दुखी भैरवी की प्रथम पक्ति
 सुन क्यों किसी ने लिया एकतारा ?
 किमने पुकारा ?



किसने दुलारा ?
 आया बड़ी साध से स्वप्न
 पर खुल न पाया दुआरा !

जो आरजू भी उठी, वह गिरी पथ के मोड़ पर ही
हर प्यास घट के निकट जा सकी,
तृप्ति के पद-कमल, मिर्क दम तोड़ कर ही
मेरी अकेली पिपासा बहुत थी
किसी ने उसे क्यो अधर से सँवारा
किसने दुलारा ?



४०

मैंने कोहनूर-सा प्यार किया जो चमका अम्बर में
मैंने सोचा शायद मुकुट परस का इसको मिल जाए

१२०

लेसनी-बेला

८

जब वह सघर्षों की कठिन कसौटी पर भी खरा रहा
उसको किसी प्रणय-इतिहासकार ने तिथि के साथ लिखा
लेकिन जब लकीर का हर फकीर टकराया रमते पर
उमने कहा बिचारा कोहनूर था, मिट्टी-मोल बिच

मुझको दो सप्तर मिले जीवन के दस सप्तर में
सब पूछो तो दोनों और निकट मेरी मजिल लाए



मैंने हीरे-जैसा गीत लिखा, जो गूँजा तारो में
मैंने सोचा शायद यह भी जौहर कहीं दिखा जाए

देखा उसे जौहरी ने तो वह यों डूब गया रस में
जैसे गागर में सागर पा जाए रेगिस्तानी श्रम
देखा उसे किमी बहुधन्धी ने तो उडती नजरो से
जैसे देख किसी सरज को आँवों में घिर आए तम

मुझको अलग-अलग मुम्कान मिली दोना दरबारो में
मैंने निश्चय किया कि दोनों पर ही गीत लिखा जाए



४१

चूल्हा जलता रहे जिन्दगी का सदा,
इसीलिये अनमोल गीत ! मे तुम्हे दे रहा माटी मोल

२२२

लेखनी-वेला

तू मुझको कितना प्यारा है क्या कहूँ
 कह कर बतलाना भी तेरे जन्म-दिवस का है अपा
 तुझे गुनगुना कर सुनना तो है मधुर
 लेकिन करना प्यार नहीं ऐसा जैसा करना अहस
 अपने जीवन में ईधन के चास्ते,
 मे म्वार्था भी हूँ निर्दय भी, पुत्र ! न तू मेरी जय व



ओ रहस्य मेरी नभ-चुम्बी रयाति के !
 कितना अम्बर रहा है मुझको तेरा यह अज्यक्त निदं
 जैसे दगरथ के घायल आदेश से
 राम अनुज औ' भार्या-सँग वनवासी हो, वनवासी, ओ
 तू न पर्यटक सिमका है टकसाल का
 पिदा दुधमुहे ! भूल न जाना अपने कुनवे का भृगं



४२

मेरे मन तुम पढो और समझो तो इस ससार को
यहाँ आदमी एक नगर है जो अन्दर घोरान है

मैं भी इसके नगर-राज्य का कोना-कोना छान रहा
 कोशिश मेरी यह कि आँख से कोई दृश्य न हो ओझल
 परकोटे के बाहर मनहर मूरत का आरूपण है
 भीतर उजड़े फूलनाग में चुप है नेहा की कोयल
 नहा सलौना सोनमहल यह पापाणो का देश है
 इन्द्रधनुष का द्वार बना पर उसमें कठिन प्रवेश है

प्रेम यहाँ म्वाथो की गलियों में खुफिया समझा जाता
 एक पुरानी खण्डहर कारा में बन्दी ईमान है



यह है अद्भुत राजनगरिया महासमर के बाद की
 व्ययहारो की कार्य-कुशलता का ही नाम समाज है
 इसके म्वर्ण सराफे में, कच्चे मीना बाज़ार में
 नोटों की मीनार पहनती अधिकारो का ताज है
 झूठ यहाँ हर रोज़ नया बन आता वक्त निहार कर
 प्यार सिर्फ अहसान प्रदर्शन पोस्टर-सा दीवार पर

मेरे मन तुम चकित न हो इस चलती-फिरती गठरी पर
 अपने में ही केन्द्रित-सीमित युग का यह इन्सान है



४३

कलम चल रही है कागज पर, नात्र चल रही सागर मे
देसूँ भर सकता हूँ कितना दर्द गीत की गागर मे

धूल बनूँ तो बनूँ कभी, इस वक्त बहार-किनारे हूँ
सूरज की हर किरन भँटने दोनों हाथ पमारें हूँ

प्यार, रूप, रस, गन्ध विश्व के, स्वयम् सिमितते आते हैं
मूर्ति बना प्रेरणा जमी है, मे आरती उतारे हूँ

पृष्ठे क्या घर-द्वार पुजारी, जो भक्तों में खोया है
गाए क्या-क्या राग कि गायक मुख के आँसू रोया है
मागे क्या वरदान कि याचक सुध-बुध खोकर सोया है

लूटे क्या आकाश कि पागल का मन नहीं म्चयम् कर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना प्यार गीत की गागर में



सोंझ हो रही, धूप घट रही, पॉव बढ़ रहे हैं तम के
डूना सूरज जली चिता सा, गीत गा रहा मातम के

लेकिन अपने जीवन के अगले-पिछले विश्वास लिये
स्वेद-अश्रु-ऋण पोछ रही लेखनी थकान-भरे श्रम के
आँख अभी निद्रिया के घर में जोड़ रही टूटे सपने
दीप अभी टुनियों के आँगन में बैठा ही है तपने
फूल अभी भँवरे की सुधि में लगा ओस-माला जपने

धूल किसी रावण-रथ पर रोती सीता-सी अम्बर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना दर्द गीत की गागर में

रात मुझे ढे रही रोशनी, अपनी आँसों का पानी
मज़िल दूर खड़ी है मुझसे, फिर भी करती अगवानी

मीत मिल रहे हैं पड़ाव पर, अलग-अलग आवाजों के
आगे बढ़ने को कहती नैपथ्यों की कोरस-वाणी

वह मन ही मेरा मन्दिर है, जहाँ नेह से जले दिया
वह क्षण ही मेरी मसजिद है, मरा मनुज भी जहाँ जिया
वह तृण ही मेरा गिरजा है, ज्वार कि जिसने जीत लिया

वह धन ही मेरा गुरुद्वारा, जो युग-युग के घर-घर में
देखूँ भर सकता हूँ कितना अर्थ गीत की गागर में



४४

तोड़ने को डोर पल में तोड़ दूँ मुश्किल नहीं है
किन्तु मन की और ही कुछ राय है

मन यही मुझसे कहा करता कि प्यारे ।
 जो समन्दर है उसे परवाह क्या है
 भाप हों है मेघ, बादल ही नदी है
 सन तुझी में आ मिलेंगे, राह क्या है
 एक अधियारी अजन है, हर दिशा से उल रही है
 किन्तु चन्दा तो तुझे अपनाय है

सोचता हूँ मैं कभी यह भी, किमी दिन
 आठमीसे आठमीकी होड भी दम तोड देगी
 हर तरह से भागने की दौड कब तक
 ख्याल मेरा है कि उसको राह ही खुद छोड देगी
 इस तरह से क्या बटोही को मिली मजिल कहीं है
 इस तरह का हर मुसाफिर जो शुरू में शेर-सा था
 अन्तत वह गाय है

टटना आसान है, जुडना कठिन है
 जिन्दगी में है अधूरी जोड-बाकी
 इसलिये घटयन्त्र कोई हो कहा से
 में उसे मजा दिया करता निशा की
 जानता हूँ यह निशा भी हार-थक कर ढल रही है
 लग गई उसको सुबह की हाय है

४५

ओ समय की वसन्ती किरन !
अश्रुक्षण के सपन जागरण !
डबडबाना नहीं

बस रहा शूल का गोंध है
ऊँपता गन्ध का पाँच है

टसलिण ओ मुबह के चरण !
जिन्द्रगी के पथिक आमरण !

डगमगाना नहीं



गीत भी मॉगता भीख है
इन दिनों कुठ नहीं ठीक है

रोशनी से सजाना गगन
और बहना कि जैसे पवन

तिलमिलाना नहीं



पाठ तेरी जलन का लिये
हर निशा में जलेंगे दिये

गोद लेगा तुझे हर पवन
चाहते है सभी धूप-धन

टिमटिमाना नहा



रात की पूनम से रर वैर
चौद से तुम्हें बुराई मिली
तृप्ति को जन-जन भीतुम गले
प्यास से तुम्हें बधाई मिली

नखत की सभा गगन में हुई
सपन की सभा नयन में हुई
अधर ने नहीं अधर को छुआ
चूम कर अलक-पलक दी दुआ

मेघ को एक बार देखा
दर्द का बादल तुम्हें लगा
किन्तु जन बार-बार देखा
चौद-सा कोमल तुम्हें लगा



राह चलते थे तुम चुपचाप
फिसी वीरान चमन के पास
फूल-पत्तों से सूनी डाल
शीश धुनती थी सूखी घास

चुभा सहसा पैरो में शूल
याद तन आया कोई फूल
सुरभि से बँधी गुलाबी देह
नयन में मधुर ओस का मेह

शूल को एक बार देखा
 राह का कण्टक तुम्हें लगा
 किन्तु जन बार-बार देखा
 फूल से मोहरा तुम्हें लगा



देख कर दुग्-दुदों की भीड़
 बचाए मुख तुम भागे कहीं
 पीर, पर, तुम्हें मिली हर ओर
 सदा ही तुमसे आगे रही

ज़िन्दगी के बन-बोहड बीच
 नेह का कमल, घृणा का कीच
 समय का श्रमर, प्रगति का गीत
 कोटि नारी-नर-स्वर-सगीत

नरुं को एक बार देखा
 रक्त का सावन तुम्हें लगा
 किन्तु जत्र बार-बार देखा
 स्वर्ग से पावन तुम्हें लगा

शब्द की थी सादी पोशाक
 भाव में चमत्कार था नहीं
 झोपडी में था मन का दीप
 स्वर्ण जैसा सिंगार था नहीं

जा रहा था कोई कवि मौन
व्यग से तुमने पृथ 'कौन ?'
छिड गया गीतकार का तार
तुम्हारा हृदय गया शमार

गीत को एक बार देखा
व्यर्थ का सपना तुम्हें लगा
किन्तु जन बार-बार देखा
बहुत धुठ अपना तुम्हें लगा



कह भले हम लें, दिशाओ ने हमारी आरती की
सत्य तो यह है, न मन्त्रिल तय हमारी भारती की
गीतवाले अनुभवों हर माथ पर गहरी शिफन है
रेत—सूनी रेत—प्यासे छन्द का होता निधन है

गर्व की प्रासाद-सीढ़ी पर विगत श्रम गे रहा है



दे चुके कुकुम जिन्हे हम, मिल गयी है धूल उनसे
म्विल रहे थे जो सुमन में, नयन है उनके कर्मण-से
शाम की उजली डगर में, चली बनजारिन सुबह की
जा रहे क्षण लाश-नैसी पालकी ले चिर-विरह की

व्यर्थ सस्या दीपकों की, स्नेह जब कम हो रहा है



मूर्ति भी हम है नहीं, मन्दिर-कलश भी हम नहा है
अर्चना के फूल ये फिर भी किसी से कम नहीं है
कुठ कठिन है ही नहीं आरोह हर मन का जुड़े यदि
काल-घट का दूध-पानी नापने हसा उड़े यदि

आज तो मन ओंसुओ का मूक आश्रम हो रहा है



४८

मिट्टी से फसलों का सोना देनेवाला देवता
नई अलावें जला रहा है गाँवों की चौपाल में

बूढ़ा नीम बता सकता है कड़वी बात किसान की
लेकिन वह है मौन और आगे भी बोलेगा नहा
क्योंकि आज धरती से आती ऐसी सोधी गन्ध है
जिसके कारण कोई दृग में आँसू धोलेगा नहीं

पीपल से पूछोगे तो वह खोलेगा इस राज को
हरदम भोर नहा छिपती है बादल वाले जाल में



इमली की खट्टी सुधियों में वह जी भरकर रो चुका
अन वह मीठी अमराई में फूँकेगा वह वॉसुरी
जिसका सप्तक जिसका सरगम सुना नहीं इतिहास ने
आल्हा, कजरी, निरहा दुहराएँगे उसकी माधुरी

अन वह बना रहा है अपने हाथों अपने स्वर्ग को
चिन्ता बन कर जो बैठा था कल तक उसके भाल में



इसकी मिट्टी में है गर्मी काल की
 इसमें ताकत है उठते भूचाल की
 इतिहासों की गाथा इसके मूल में
 एक चमकती दुनियाँ इसकी धूल में
 इसके पनन-शक्रोरो में वह प्यास है
 सिर्फ बहारों को जिसका आभास है
 सजा और सकारे ऐसे है कहीं
 सूरज-चाँद-सितारे ऐसे है कहीं
 श्याम-घटा-त्रिजली-बरखा मन भावनी
 रिमझिम बूद फुहार चदनियों सागरी
 आल्हा की हुकार, रमायन की कथा
 वृन्दावन के रास, गोपियों की व्यथा
 त्योहारों की धूम, दिवाली के द्विये
 होली के रंगो-निन कोई क्या जिये
 मनी पुरी के नृत्यों की चंचल परी
 और भरत नाट्यम पर छिड़ती बाँसुरी
 यह सब मेरी दुनियाँ की आवाज है
 इस पर ही तो होता मुझको नाज़ है



लो अब गाता हूँ
 कोई हँसती-गाती राहों में अगार पिछाए ना
 पथ की धूल है ये
 इससे प्यार मुझको
 कोई मेरी खुशहाली पर खूनी आँख उठाए ना
 मेरा देश है ये
 इससे प्यार मुझको
 मेरा देश है ये



झूमर - हँसली - पायल - नूपुर - रागिनी
 काजल-मँहदी-म्हावर, क्वारी चोदनी
 शुभशकुनो के मगल-कलश दुआर पर
 अनच्याहे दृग उठते वन्दनवार पर
 और एरु दिन जाती घर से लाडली
 जुकुम की डोली मे चम्पा की कली
 देश कहीं परदेस कहा, किसकी लगन
 किमकी ममता-डोरी, मन किसमे भगन
 और एरु दिन सधपो की राह पर
 जाता है परिवार निलखता आह भर
 साध चली शमशान, उमगो पर कफन
 प्यासे मनना प्यासे ही हो गए दफन
 लेकिन इसका अर्थ नहीं होता मरण
 मुझको जाना है न किसी की भी शरण

हँसी उड़ाने वाले जाते भूल है
 मेरे मरघट में भी खिलते फूल है
 इन पैरों में अभी सफ़र की प्यास है
 इन अधरों पर तो अब भी उल्लास है

लो अब गाता हूँ

कोई मधुञ्जतु इस पतझर पर दानी हाथ उठाये ना
 मेरा बाग है ये

इससे प्यार मुझको

कोई मेरे दुर्दिन को खरीद अहमान दिखाए ना
 मेरा देश है ये

इससे प्यार मुझको

मेरा देश है ये



कौन गया है रेखाओं को चीर कर
 रागोली से बनी हुई तमगीर पर
 वासन्ती मिलनानिल सुलकर नाचती
 राग-भरी-सी 'रूपम'-'गीतम' बॉचती
 सस्कृति की पतली डाली है झूमती
 नई गुलाबी फ़ला जिसे है चूमती
 फूल रहे अंबजा बोझिल अमराइयों
 भीठी-भीठी पीर-भरी अंगडाइयों
 वरसा मे निरही की ममता जागती
 हेर-हेर निरहिन को नदिया भागती

मे अब गाता हूँ
 फोटे गोंगिया को लखी गधा में बिट्टड़ाण गा
 नानाभाण हूँ ये,
 इनमे प्यार मुझको,
 फोटे पूर-पात को कर्मासी शबनम उजड़ाण गा
 भीगी जिन हूँ ये,
 इनमे प्यार तुझको,
 मेरा टंग हूँ ये ।



किमी पेड़ को बना गमैती, तैश में
 गध चली जाती है नभ के देश में
 फिर जैमे अम्बर से शरते फूल है
 भू को म्यजाजलि में जाते शूल है

लगता है, ये आई मीरा बावरी
 नर्तित-भुजित-जीवित राधा सौवरी
 और 'सुनो भई साधो'—जुलहा बोलता
 दास क्रीरा विष में अमृत घोलता
 नभ के पदें जलते सूरज-दीप से
 चले सँदेमे इन्द्रराज के द्वीप से
 मेघदूत ज्यो कालिदास के राज के
 ठिडते मेघमल्लहार किसी के साज के
 तानसेन-सँग आता बैजूबावरा
 सुन जिसको निज मुध-बुध खोदती धरा
 'बरमत नयन हमारे'—सूरा झूमता
 चित्रकूट के वन म तुल्मी घूमता
 गीतकार से कहता मै, तुम भी उठो
 झूमो मत पिछ्णी जय मे, आनाज़ दो

लो अत्र गाता हूँ
 कोई मेरे सरगम के पदों में आग लगाए ना
 मेरा गीत है ये
 इससे प्यार मुझको
 कोई मरथल के मरघट म छन्दो को दफनाए ना
 भैरव राग है ये
 इससे प्यार मुझको
 मेरा देश है ये

सुख का सपना हो चाहे दुख की बदली
मेरी दुनियाँ गैरो से सौ बार भली

तुम भी सुनते होगे इस सन्देश को
• नई उँमरें हैं मिली पुराने देश को

जाऊँगा अपनी मिट्टी को पूजता
देरूँगा अब नहीं स्वप्न को द्रष्टता

सिर-माये लेना है धरती-धूल को
जिसने जन्मा है मधुवन में फूल को

लेकिन यह क्या, होती है आवाज़ क्या
धुँआ, आग, चीत्कार, ध्वस, है राज़ क्या

देशों में होती है खाचातान क्यों
शीत-युद्ध से दुनियाँ है हैरान क्यों

मेरे सुख-सपनों पर किसका हाथ है
क्यों पीछे चलती छाया-सी रात है

तोप लगाई है किमने इन्सान पर
क्या एटम गिरना है हिन्दुस्तान पर ?

नहीं, नहीं, मैं नहीं इसे होने दूँगा
मैं अपने सत्र प्रश्नों का उत्तर लूँगा

लो अब गाता हूँ

कोई मेरी कगाली पर अपना महल उठाए ना
ये जो झोपडी है,

इससे प्यार मुझको,

मैंने खाँची लक्ष्मण-रेखा कोई पाँव बढाए ना
मेरा देश है ये
इससे प्यार मुझको
मेरा देश है ये -- -- .



आजाज आ रही है—
 साधना तुम्हारी आज कहीं से कहीं जा रही है
 पथ भी तुम्ही बनाते हो,
 रथ भी तुम्ही चलाते हो,
 राह बनाने वाले हो, पथ पृच्छा नहीं करो
 कलम के कारीगरो ! उठो
 कलम के महनतकशो ! उठो
 कलम के जादूगरो ! उठो
 तुम्हे मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
 कलम के जादूगरो ! उठो

कल तुम क्या थे और आज क्या हो
 कल स्रष्टा थे आज लालसा हो
 कल तुम रोते थे, जग रोता था
 झरना तुममें बेसुध होता था
 नभ को जन तुम देते थे वाणी
 इन्द्रधनुष करता था अगवानी
 छिडता था गीतो का इकतारा
 और चमक जाता था ध्रुवतारा

याद तुम्हें होगी कोयल की भी
 बरखा रानी की पायल की भी
 पर्वत जैसे सागर में घुलकर
 तब तुम सनसे मिलते थे खुलकर
 ऊपर से हर साज़ सँवारे से
 अब तुम चलते हो मनमारे से
 प्राणों के खेतों पर पाला है
 यह सब तुमने क्या कर डाला है

आवाज़ आ रही है—
 सर्जना तुम्हारी आज कहीं से कहीं जा रही है

तुम सपने के नायक हो,
 तुम आँसू के गायक हो,
 मोती की क्रीमत पर आँसू तोला नहीं करो
 समय की आसावरी सुनो,
 नये स्वर की बासुरी बजो,
 कभीरा-सी शायरी बुनो,
 तुम्हे मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
 कलम के कारीगरो उठो



आज अजन कुछ हिलते-डुलते तुम
 किसी धर्म-कॉटे पर तुलते तुम
 कुन्दन हो लो जीवन में अपने
 कचन तुमको दिखा रहा सपने
 ढकी हुई रेशम में रोटी है
 सनकी अपनी अलग कसौटी है
 यह भी बड़े मज़े की है हलचल
 दर्द बटाने आती है मखमल !

आवृत और अनावृत चोरी में
 अब तुम भी जा रहे तिजोरी में
 गिरवी धरकर गीतों के घर को
 क्या संदेश दोगे दुनिया-भर को

क्या पेसा पाँसा फेंकोगे तुम
 वासन्ती मन्ती बेचोगे तुम
 आग लगा केमर की क्यारी में
 कन बहार आई फुल्यारी में

आवाज़ आ रही है—
 कल्पना तुम्हारी आज कहीं से कहीं जा रही है
 धूप तुम्हारी छाया है,
 तुमको सनने गाया है,
 जग को कितनी प्यास तुम्हारी, भूला नहा करो
 स्वरो की वीणा और कसो,
 नयन में मन में और बसो,
 मिले सुख पर कुठ और हँसो,
 तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
 कलम के कारीगरो, उठो !



वैकुण्ठी ऐरावत के आगे
 तुम चारण-सेवक बन कर भागे
 विद्यापति तो ढोल रहा रस को
 मगर नहा शिवसिंह मिला उसको
 चिन्तन का आदर्श सो गया है
 बाण भट्ट का हर्ष खो गया है

कालिदास खिलता सरोज सा है
कहों पारखी आज भोज-सा है

भूषण है, पर नहीं पालकी है
है तो केवल छत्रसाल की है
क्यो सामन्त उठाए अब टोली
सिर्फ सराहे वह कवि का बोली
इसीलिए वेतन की जानी में
गाली है कवि की कगाली में
इससे बुरी दशा भी क्या होगी
कवि होता जाता वेतन भोगी

आवाज़ आ रही है—
वन्दना तुम्हारी आज कहों से कहों जा रही है
घिरी घटा का कहना क्या,
इस बहाव में बहना क्या,
कलम उठी तो उठी उसे फिर रोका नहीं करो
किसी तुलसी की तरह जियो,
किसी मीरा की तरह जियो,
किमी सूर्य की दृष्टि पियो,
तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
कलम के जादूगरो ! उठो

आर्डे परिवर्तन की वेला है
 यह समुद्र-मथन की वेला है
 अब तो लगता है हर चमन लुटा
 सरम्बती का वेणी-सुमन लुटा
 मुरझाया है कमल, भग्न वीणा
 यह भी कोई जीने में जीना
 मण्डप की निर्मसन कौमुदी-सी
 आज शारदा लुट्टी द्रोपदी-मी

पल-पल सघणों का चौमासा
 चातक फिर भी प्यासा का प्यासा
 उससे मिलो कि कुठ तो दरद घटे
 उससे कहो कि पथ के शूल हटे
 तुम दर्शन-दिग्दर्शन में भूले
 अमराई में झूल रहे झूले
 कविता है प्रयोग के मरुथल में
 या फिर वह गुरुडम के दलदल में

आवाज़ आ रही है—
 अर्चना तुम्हारी आज कहीं से कहीं जा रही है
 अमिय तुम्हीं ने गाया है,
 विप का म्वाद बताया है,
 इस शरान से बचो, पियो मत, शूमा नहीं करो

सुधा से खाली मेघ भरो,
 सुबह के कर में किरन धरो,
 किरन के माथे तिलक करो,
 तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो
 कलम के जादूगारो ! उठो



तुम गाओ तो फिर धरती डोले
 रुंधी रही जो कौयलिया, बोले
 तुम प्रभा हो, दो नूतन कृतियों
 रचना की है अद्भुत परिणतियों
 छन्दों का जयदेव निहार उठे
 तुम्हें गीत-गोविन्द पुकार उठे
 पूजा प्रतिभा और म्वेद की हो
 रचना नूतन सामवेद की हो

मिट्टी आए, मगल-घट बन कर
 पौधा झूमे, वशी-घट बन कर
 लूरूपटों पर ठडी हवा चले
 दुनियाँ कर्मन राखी बँधा चले
 गले मिले भम्मासुर मागर से
 गीतल हो बादल की गागर से
 गीत उड़े सदियों का साज लिये
 नये पशिया की आवाज लिये

आवाज़ आ रही है—

प्रेरणा तुम्हारे लिये नया इतिहास ला रही है

तुम्हें महारों गाना है,

दीपक नहीं सुनाना है,

चमन समझ ज्वालामुखियों पर डोला नहीं करो

चन्दनी गीत बने फूलो,

फूल पर शबनम बन झूलो,

राह की धूल नहीं भूलो,

तुम्हें मिली अनमोल लेखनी, सौदा नहीं करो

कलम के कारीगरो, उठो !

कलम के मेहनतकशो, उठो !

कलम के जादूगरो, उठो !

५१

संस्कृतियों के देश मेरे !

संस्कृतियों के देश मेरे !

संस्कृतियों के देश मेरे !

ज्योति दो

ज्ञान दो

तम जहाँ हो

छान दो



अब तुम नभ से उतरे भू पर हो,
सामन्ती बाधा से ऊपर हो,
मिलरू मिट्टी के सुगन्ध-भोगो,
मेरी धरती के नृतन लोगो ।

एक नया ही मोड़ लिया है पथ ने हिन्दुस्तान के
माटी को शकलें दे देंगे जादूगर निर्माण के

निर्माणो के देश मेरे !
वरदानो के देश मेरे !
तूफानो के देश मेरे !

कुछ कहो,
कुछ सहो,
दूर बैठे—
मत रहो



स्नेह जुड़ा दीपोत्सव मनता है,
बूँद-बूँद से सागर बनता है,
तुम भी सागर मर्यादा वाले,
ज्वार उठाओ मत बाधा वाले,

बूँद-बूँद को, लहर-लहर को, ज्वार-ज्वार को जोड़ दो
मन-मन में हों भोर जहाँ, तुम नाव उधर ही मोड़ दो

खजुराहो के देश मेरे !
उज्जयिनी के देश मेरे !
मृगनयनी के देश मेरे !

फिर उठो,
फिर जुटो,
स्वप्न वाली
आहटो !

रामटेक से दूत चला था जो,
मेघो मे बन गया क़िला था जो,
सौँची ने जो युग सर्जाया था,
वह विदिशा के पथ से आया था,

तन का दर्पण, अब का दर्पण दोनों ही है सामने
उन्हें देखकर आगत देखो आँसों दी है रामने

ओ गाल्य के देश मेरे !
ओ माल्य के देश मेरे !
युग-मान्य के देश मेरे !

सुख सजो,
दुख तजो,
दिक्रमो के
वशजो ।



अभी सफर काफी तय करना है
डगर-डगर की खाई भरना है
हम नक्षत्र बने सूनेपन में
पूरे हों सपने जो हैं मन में

सम्कृति सबकी है, उसमें क्या जाति और क्या प्रान्त रे
नगर-नगर में, गली-गली में, मत हो जाना आन्त रे

कहते है विश्वास मेरे
ये धरती-आकाश मेरे
आएँगे मधुमास मेरे

साथ दो,
हाथ दो,
हर तिमिर को
मात दो ।



५२

गूँज-भरे जगल में
धूल-भरे अचल में
रात के अमगल में
 मगली सितारा
तीसरा अँगारा
भौंकता दुवारा
 टूक-टूक हो न जाय
एशिया हमारा

•

पूरु की नील-नदी है
तैरो बीसर्गो सदी है
पशुओ का शोर किनारे
उनने जुठ शर्त बदी है

उनके सब स्वप्न विकल है
कीचड से मुक्त कमल है

दलडल मे वे पडे हुए
पिछले सपने सडे हुए

मन मे भयभीत मनौती
फिर भी डे रहे चुनौती

स्वीकारो, क्योकि हमे खुलकर ही बहना है
कमलो के गहनों को नदियो ने पहना है

नदी-नदी मुक्त बहे
लहर-लहर मस्त रहे
बूँद-ज्वाल अस्त रहे
स्वस्थ हो किनारा

मज़िली निगाहे
खींच रहीं बाहे
चीख रहा नीर-भरी
राह नी कराहे

आतिशबाजी प्रकाश की
वन बैठो महानाश की
जन्मी वाग्द चीन से
भोली साथिन रुपास की

मुख क निर्दोष ये दिये
तोषो के काम आ लिये

डाल हिली शुस्ल पक्ष की
सस्कृति के वश-वृक्ष की

अन्धकार बॉध कर चला
पूरव के द्वार अर्गला

सूरज का दीप न जो जल्ता आकाश मे
बैठे ही रहते हम किरनो की आस मे

चम्पा के पाँच पख
डोल रहे है निशक
परत के अरु-अरु, सगमी त्रिधारा

नयन वेधशाला
देख रही ज्वाला
उपनिवेशवादी का
चम्पर्द दुगाला

राज-योग के दिन बीते
बल-प्रयोग के दिन बीते
कोहनूर वापिस होगा
भोग-रोग के दिन बीते

फूल खिले जो गमलों में
अन्तर उनमें कमलों में

गुम्बद - महाराज - मकबरा
मन्दिर वाली परम्परा

इनको फिरसे ज़रा पढ़ो
शिक्षक है मोहन जदड़ो

ठहरो रे ठहरो, ओ सवाहक ध्वन्स के !
अन्तिम दिन याद करो रावण औ कस के

चीनी-बर्मा हम है,
मिस्री-रूसी हम है,
सैन्धव-वशी हम हे, विश्व हमें प्यारा

रून चले आधी,
नेह-डोर बाधी,
नहीं ज़ार-नीरो हम
बुद्ध और गाधी !



चूनर है आज अनमनी
निर्धन-सी त्रस्त करधनी
जग की हर एक दिशा की
होती दो दूक अर्गनी

आँसू में इबी-इबी
खुशियों से उनी-उनी

दहली का म्वर रूँधा हुआ
शहनाई ने नहीं हुआ

लाठी औ भेस की कथा
सभ्यो के विश्व में वृथा

युग का इतिहास नहीं लौटाए लौटेगा
लोह का राजमुकुट स्वयम् गला घोटेगा

उठो एशियाइयो !
देश-देश भाइयो !
मुक्ति पर मरो-जियो, समय न कभी हारा

एटमी इरादे
वायुयान लादे
जगल-कानून चले
ओढ कर लबादे



आज मे आकाश में हूँ



शीश पर बादल घिरे है
 और कुठ ऐमे कि जो मेरे पगों में आ गिरे हैं
 गीत उनकी वन्दना के गा रहा हूँ
 निरुट-दर्शन के लिये मैं मेघ-तट पर आ रहा हूँ
 किन्तु फिर भी कण्ठ सूखा,
 लग रहा यह देश सूखा,
 बादलो के देश में या मरुस्थल में ?
 मैं कहाँ हूँ ?
 लोग जिसको पृछते हैं, पूजते है
 व्यर्थ है वह मेघ नगरी—
 मैं यहाँ भी प्यास में हूँ
 आज मैं आकाश में हूँ



मैं विमानों के टवाई झूलनों में झूलता हूँ
 बादलों से उठ, जरा ऊपर,
 पहाड़ी चोटियों पर झूम कर,
 उस भूमि को ही भूलता हूँ—
 गीत का म्वर जिस जगह से अभी मद्धिम आ रहा है
 प्रीति का स्वर आँख के हर म्वप्न को ललचा रहा है
 इस परी के लोक में भी
 मैं उसी की आस में हूँ
 आज मैं आकाश में हूँ



क्या नहीं यह सच कि मैं इस
 प्रयोगी नभ के त्रिशकु-मुमात्रा में
 यान की इस भीड़वाली यात्रा में
 मूर्तवत हूँ, किसी सुन्दर-असुन्दर के पास बैठा
 दृष्टि करती आरती है
 और यह सम्मान मन्दिर में यहाँ के कम नहीं है—
 मैं इसी विश्वास में हूँ
 आज मैं आकाश में हूँ



घटा उतनी है नहा सुन्दर कि जितना सोचता था
 किन्तु फिर भी खाचती है ही मुझे वह
 देख कर उज्ज्वल कपासी पाटलों से बादलों को

(जो सदा से सिर फिरे है
 और सिर से पाँव तक आकर घिरे है)
 गुनगुनाने लग गया हूँ प्रेरणाएँ
 और ये सह-यात्री कुछ सुन न पाते गीत-गुजन
 यान के इस शोर गुल में
 यान के बाहर घटाओं को पता क्या
 मैं उन्हा की कल्पना में
 व्यस्त हूँ, संगीत-मय हूँ
 दूर बाहर हों भले वे
 किंतु वे मस्तिष्क में मन में कि मेरे पास है
 मैं भी उन्हा के पास में हूँ
 आज मैं आकाश में हूँ



मेघ का आकाश ऊपर और नीचे
 सृष्टि सत्र अदृश्य ही है
 देख मैं पाता नहीं कुछ
 फेंक मैं पाता नहा मन
 उन सलौनी घाटियों पर पर्वतों पर
 शिखर जिनके मन्दिरों के गुम्बदों-से
 खेत जिनकी सीढ़ियों से
 जहाँ परमतराज ने उठकर युगों से
 बाँध डाले है प्रभजन

११

आज उनको देवलोकी व्योम में क्यों
देख भी पाता नहीं मन
सोचता हूँ, भूमिका है
मैं अभी अभ्यास में हूँ
आज मैं आकाश में हूँ



अभी थोड़ी देर पहले क्या समा था
खेत-पतों के सलौने वस्त्र पहने
गिरि-शिखर-माला खड़ी थी
चीड़-वन था मुग्ध, सयत
और मन में उठ रहे तूफान-सा मजमा जमा था
सोचता था, मैं बहुत उल्लास में हूँ
आज मैं आकाश में हूँ



यह हवाई यान पछी की तरह है
फडफडाते पख,
पछी भर रहा ऊँची उडानें
यह समय से खेलता हर बार
उडने के बहाने
हस यह ऊँचाइयो-नाहराडयो के नीच उडता

वह माली है, वह सुगन्धू है, हम चमन
 वह मूरत है, वह मन्दिर है, हम नमन
 छाया है माये पर आशीर्वाद-सा
 वह सस्कृतियों के मीठे सवाद-मा

उसकी दहरी अपना माथा टेक कर
 हम उन्नत होते हैं उसको देखकर
 ऋतुओ ! उसको नित नूतन परिधान दो
 झुलस रही है धरती, सावन दान दो
 सरल नहीं परिवर्तन मे मन ढालना
 हर पत्थर से भागीरथी निकालना

जिस मन्दिर-भसज्जिद-गिरजे में कैद पडा इन्सान हो
 जाओ उसमें फिरन ! किवारा खोल दो
 कुकुम-पत्रो ! भारत की जय बोल दो



उसको करो प्रणाम, दृगों में नीर है
 झेलम की ओम्बो वाला कश्मीर है
 बजरे और शिकारे उसकी झील के
 लगते बनजारे तारे कन्डील-से

किसी नारियल-वन की गेय सुगन्ध से
 अतरीप के दूरागत मकरन्द से
 फूटा करता नये गीत का अन्तरा
 कुछ क्षण को दुख भूल, विहँसती है धरा

५५

कौन स्वीकारे भरी अजलि नयन की
आज के कुछ, कुछ विगत के आँसुओं से

दो छवि-रुमलो के अन्तर-आवास में
कोई बादल घुमड रहा आकाश में

सर्जन की मगल-वेला में धूमकेतु क्या चाहता
बच्चो की पावन उत्सुकता तोल दो
देशज मित्रो ! भारत की जय बोल दो



हम अनेकता में भी तो है एक ही
हर झगडे में जीता सदा विवेक ही
कृति, आकृति, सस्कृति भाषा के वास्ते
बने हुए है मिलते-जुलते रास्ते

आस्थाओ की टकराहट से लाभ क्या
मज़िल को हम देंगे भला जवाब क्या
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी
सर्जन-रत हो आज़ादी के दिन जियो
श्रम-रुमाओ, रचनाकारो, साथियो !

शान्ति और सम्कृति की जो बहती स्वाधीना जाहरी
कोई रोके, बलिदानी रँग घोल दो
रक्त-चरित्रो ! भारत की जय बोल दो



५५

कौन स्वीकारे भरी अजलि नयन की
आज के कुछ, कुछ विगत के आँसुओं से

दूर वेदी पर महादेवी प्रतिष्ठित
पुण्य-सलिला, गीत की भागीरथी
श्रेष्ठ पूजन के नियत्रक हाथ जोड़े
घेर कर कहते कि 'हम ही है व्रती'

क्यों मुझे ही रोकते प्रहरी उन्हीं के
पूछता मैं मौन व्रत के आँसुओं से



मान-मन्दिर मूर्ति का है, चारणों का
किन्तु है अपमान-मन्दिर वह मुझे
द्वार पर जो रोकता सावन-बहारों
एक रेगिस्तान मन्दिर वह मुझे

मूर्ति-पूजन के नियन्ताओ ! निहारो
रक्त गिरता है शपथ के आँसुओं से



पूजनीयो को भले पूजक नया हूँ
प्यार प्रतिमा का मुझे भी तो मिले
वर्ग-भेदों में नहीं सीमित रहा जो
दान गरिमा का मुझे भी तो मिले

कह रहा है द्वार का हर एक हरिजन
मच पर होते स्वगत के आँसुओं से

नींद के कारीगरो ने रूप शिल्पा
टिमटिमाती-रात की दीवार पर
आ गए जमभोर के शिल्पी वहाँ तो
व्यग करने लग गए अधियार पर
तर-श्वतर है सीढ़ियों हीरक-महल की
भीड़-बोझिल राज-पथ के आँसुओं से



५६

बोल, बोल, बोल, अरी बेला ! तू है कहाँ
श्रमजा सी स्वेदमयी
और सामवेद मयी
कागज की राह-चली लेखनी पुकारती
बोल, बोल, बोल, अरी बेला तू है कहाँ

शब्दों का, छन्दों का, भावों का हर अमर
 गाता है गीत किन्हीं गन्धों के राग में
 दूर किसी बगिया में खिलने से लाभ क्या
 बेला के फूल खिले कविता के बाग में
 बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ



भोर-साँझ को निहारती हुई समुद्र-जा
 एक बेशक्रीमती लहर मुझे उधार दे
 एक छटा ज्वारों की मैं भी तो देख लूँ
 एक घटा सावन की रचना पर वार दे
 बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ



गीतों की व्यक्ति और रागों की मीड-सी
 तारों की तीर्थवती बेला को है नमन
 पावन उस ममता का स्नेह पात्र है कहाँ
 स्वेद-रक्त-अश्रु किस कटोरे में लें शरण
 बोल, बोल, बोल अरी बेला तू है कहाँ



जो है मन का धनी
 जिसकी है लेखनी

उसकी ही बेला है, युग है, है भारती
कागज़ की राह चली लेखनी पुकारती
सगम को व्यग्र कलम, बेला तू है कहीं
बोल, बोल, बोल परी बेला तू है कहीं



५७

मजिल के मन्दिर में पूजा के थाल-सा
पूरन है गीत पर अपूरन है आरती

आँसू के फूल और मुट्ठी भर धूल है
 ये ही बस कुकुम है, ये ही है अर्चना
 पावन है, उजली है कर्पूरी सर्जना
 भूलो से बोझिल ये नयनो का कूल है
 देगा वरदान अभी शायद ही देवता
 मन मेरा फूला है, नैया के पाल-सा
 धडकन की बनजारिन, हिम्मत ना हारती

सुख का जो कर्ज लिया, कुछ दिन के चास्ते
 बढ़ जाए व्याज नहीं अब तक के मूल से
 भूलो को कब तक है दुहराना मूल से
 अँधियारा घेरे है उजियारे रास्ते
 देगा वरदान अभी शायद ही देवता
 पथ ये जो सीधा है घाटी के ढाल-सा
 रथ अपना थम-थम कर ले जाना सारथी !

गूँज रही बेल-सी मेरी ये लेखनी
 सरगम जो सोए है इससे ही जाग लें
 आँखो से समिधाएँ, साँसों से आग लें
 गहरी अँधियारी है, आगे भी देखनी
 देगा वरदान अभी शायद ही देवता
 जिसका माथा ऊँचा सूरज के भाल सा
 उमको ही राज तिलक करती है भारती

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०	८	तुमड तना	तुम इतना
४९	३	मुझे	मगर
९१	१	भींग	भीग
१०९	१६	सुने	सुनें
१४६	१०	खोदती	खो देती
१६३	२	बैठो	बैठी
१६८	११	पास	पाश



१९५७ के नवीनतम प्रकाशन

श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

निबन्ध

माटी हो गई सोना

प्रस्तुत पुस्तकमें बल और बलिदानको जीवन चेतना देनेवाले १७ अमर शहीदाकी जीवन कथाओंका अद्भूतचित्र पेंटिचा है।

पृष्ठ स० १२४

मूल्य दो रुपये

श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

निबन्ध

वाजे पायलियाके घुँघरू

प्रस्तुत पुस्तकके इन लेखामें वही शुभ संपर्क है जो अशान्तिमें शान्ति, नीरसतामें सरसता और निराशामें आशाके भाव देकर मनको बिना किसी प्रयत्नके बदल देता है।

पृष्ठ स० २६६

मूल्य चार रुपये

श्री भानन्दप्रकाश जैन

कहानियाँ

कालके पख

प्रस्तुत पुस्तकमें १४ ऐतिहासिक नवीन कहानियाँका संग्रह है। भाषा सरस और परिमार्जित है।

पृष्ठ स० २५८

मूल्य तीन रुपये

श्री रामप्रकाश जैन

सूक्तियाँ

शरत्की सूक्तियाँ

प्रस्तुत पुस्तकमें शरत्की लेखनीके निर्भरसे अनेक साहित्यिक सूक्तियोंके मणि माणिक्य सहसा ही झरते चले गये हैं उन्हींका सङ्कलन इसमें है। ये सूक्तियाँ शरत्की बहुरूपी रचनाओं और पत्रासे चुनी गई हैं।

पृष्ठ स० ११६

मूल्य दो रुपये

श्री अज्ञेय

कहानियाँ

जय-दोल

इस संग्रहमें अपने देशाटन और युद्धकालीन अनुभवोंका लेखकने पूरा लाभ उठाया है, ये कहानियाँ आपको अपरिचित किन्तु आकर्षक नये प्रदेशों, नये लोगों, नयी स्थिति में ले जावेंगी—किन्तु निरे कल्पना लोकमें पलायन करके नहीं, एक नयी तन्मय कर लेनेवाली यथार्थताका उद्घाटन करके।

पृष्ठ स० १६२

मूल्य तीन रुपये

श्री राधाकृष्ण प्रसाद एम० ए०

उपन्यास

संस्कारो की राह

प्रस्तुत पुस्तक एक सामाजिक घटना प्रधान उपन्यास है। इसमें लेखकने मध्यवर्ग तथा मध्यवर्गने संस्कारोंकी क्या सरल सीधे-सादे शब्दोंमें ग्रथित की है।

पृष्ठ स० १७२

मूल्य ढाई रुपये

श्रीकृष्ण एम० ए०

एकाकी नाटक

तरकशके तीर

प्रस्तुत पुस्तकमें १४ एकाकी नाटक संग्रहित है। भाषा सरस सुबोध है। सभी नाटक रगमचपर आसानीसे खेले जा सकते हैं।

पृष्ठ स० १६६

मूल्य तीन रुपये

सम्पादक—सयेन्द्र शरत्

कहानियाँ

नये चित्र

प्रस्तुत पुस्तकमें सन् १९४८ से १९५२ तककी प्रतिनिधि हिन्दी कहानियाँका सकलन किया गया है।

पृष्ठ स० १६२

मूल्य तीन रुपये

अभिनव एव समग्रहणोय काव्य-कृतियाँ

आंगन के पार द्वार अज्ञेय
साहित्य अकादमी-द्वारा पुरस्कृत-मम्मा-
नित अज्ञेयकी नवीनतम एव मम-
स्पर्शी कविताआका सग्रह ।

मूल्य ३ ००

● चाँद का मुँह टेढ़ा है मुक्तिबोध
स्व० मुक्तिबोधकी कविताआका यह
सग्रह हिन्दी काव्यकी नयी प्रश्रिता,
क्षमता और युगबोधकी सचेष्टताका
ही प्रयोग नहीं, नयी उपलब्धियोंका
भी मानक है ।

मूल्य ८ ००

● हिम विद्ध डॉ० जगदीश गुप्त
ऐसी मर्मस्पर्शी कविताआका सग्रह जो
अनुभूतिकी सत्ता, अभिव्यक्तिकी
ताडगी, व्यापक और समर्थ जीवन-
चेतना तथा कविकी अनूठी कला
त्मकताका परिचय देता है ।

मूल्य ३ ००

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा
प्रकाशित